हिम-ज्योति

अंक–2 वर्षः 2019–20

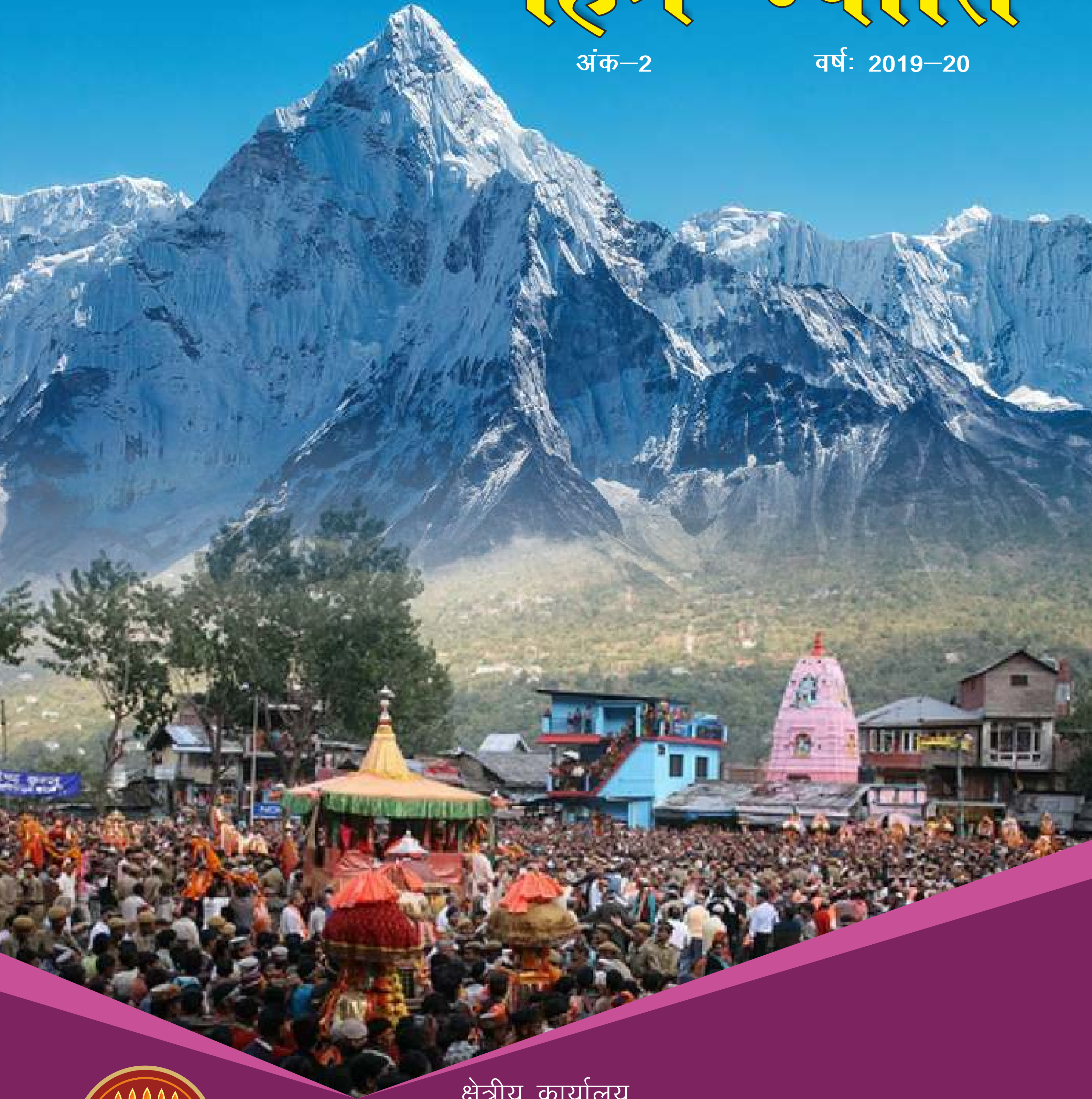

क्षेत्रीय कार्यालय

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

बद्दी (हिमाचल प्रदेश)

मुखपृष्ठ का परिचय

हिमाचल प्रदेश के कुल्लू का दशहरा पौराणिक परंपरा और भारतीय संस्कृति का अनोखा संगम है। कुल्लू का दशहरा देश में अलग पहचान रखता है। कुल्लू का दशहरा पर्व परंपरा और ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्व रखता है। जब देश में लोग दशहरा मना चुके होते हैं तब कुल्लू दशहरे का आरंभ होता है। सात दिनों तक चलने वाले कुल्लू दशहरा का भव्य उत्सव हिमाचल प्रदेश के संस्कृति और धार्मिक आस्था का प्रतीक है। कुल्लू दशहरे की खास बात यह भी है कि यहां रावण दहन के बजाए लंका दहन की परंपरा है। ग्रामीण अलग–अलग देवी–देवताओं की मूर्तियों को अपने सिर पर रखकर भगवान रघुनाथ के मंदिर पहुंचते हैं। सैंकड़ों की संख्या में मूर्तियों को ढालपुर मैदान में रखा जाता है। इन मूर्तियों में यहां की कुल देवी हिडिंबा भी होती हैं। एक सप्ताह तक चलने वाले इस उत्सव में कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है। उत्सव के आखिरी दिन बहुत सारी सूखी लकड़ियों को एकत्रित किया जाता है और फिर लंका दहन के रूप में लकड़ियों के ढ़ेर को जलाया जाता है। इस खास दशहरे को देखने के लिए विश्व भर से पर्यटक आते हैं।

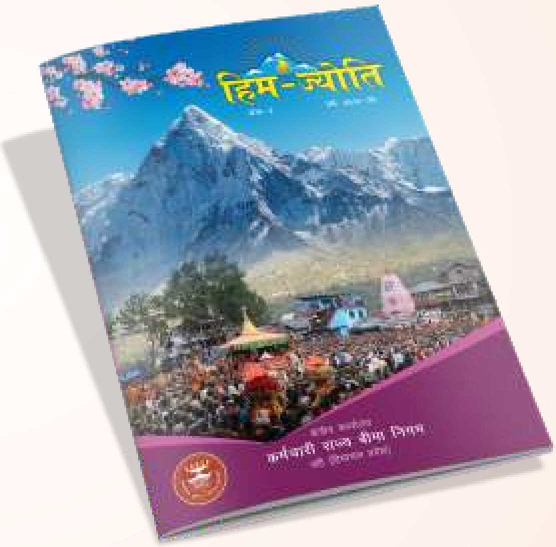

हिम-ज्योति

अंक–2 2019-20

(केवल विभागीय परिचालन के लिए)

संरक्षक सह प्रधान संपादक
पी.के.नरूला
अपर आयुक्त सह क्षेत्रीय निदेशक

संयोजक
हरपाल सिंह
सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा)

संपादक
कुमार रविशंकर
वरिष्ठ अनुवादक

प्रबंध संपादन
पी.बी.गुरूंग
उप निदेशक

संपादन समिति सदस्य
डा. अमित शालीवाल
राज्य चिकित्सा अधिकारी

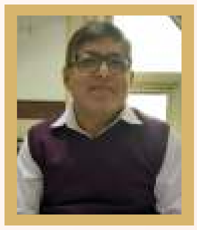

संपादन समिति सदस्य
विकास वर्मा
सहायक निदेशक

प्रकाशक
राजभाषा शाखा, क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
बद्दी (हिमाचल प्रदेश) –173205
दूरभाष: 0172–24563, फैक्स 0172–215962, वी.ओ.आई.पी. 21795025,
ई–मेल – rd-hp@esic-nic-in, rajbhasha-hp@esic-nic-in

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार एवं तथ्यों का उत्तरदायित्व रचनाकारों का है । इनसे कर्मचारी राज्य बीमा निगम का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्रिका में इंटरनेट पर उपलब्ध चित्रों का साभार उपयोग किया गया है।

हिम-ज्योति 2019-20

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	रचनाकार	पृष्ठ
1.	महानिदेशक, क.रा.बी.निगम संदेश		1
2.	बीमा आयुक्त (राजभाषा), क.रा.बी.निगम संदेश		2
3.	संरक्षक की कलम से	पी.के.नरूला	3
4.	राजभाषा प्रभारी की कलम से	हरपाल सिंह	4
5.	संपादकीय	कुमार रविशंकर	5
6.	हिमाचल प्रदेश में क.रा.बी.योजना	पी.बी.गुरूंग	6–7
7.	विशेष सेवा पखवाड़ा (फोटो गैलरी)	––	8–9
8.	निगम में लागू विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का संक्षिप्त विवरण	राजभाषा शाखा	10–11
9.	राजभाषा हिंदी कार्यशाला (फोटो गैलरी)	––	12–13
10.	एक संकल्प साक्षरता/एक संदेश – युवाशक्ति	चीना गुप्ता	14
11.	ब्रजेश्वरी माता का मंदिर	सन्नी मल्होत्रा	15
12.	लिखो कवि लिखो/जिजीविषा	विकास कुमार	16
13.	राजभाषा पखवाड़ा/राजभाषा प्रदर्शनी (फोटो गैलरी)	––	17
14.	विराकास बैठक/राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस (फोटो गैलरी)	––	18
15.	पराशर झील– रहस्य और प्राकृतिक अचरज	हरपाल सिंह	19
16.	भारत में सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था	ब्रजभूषण चौधरी	20–21
17.	एक कर्मचारी सौ बीमारी	सूरजभान	22
18.	शाखा प्रबंधक बैठक/स्वच्छता पखवाड़ा (फोटो गैलरी)	––	23
19.	नियोजक के साथ बैठक/आंचलिक खेलकूद (फोटो गैलरी)	––	24
20.	मां का जन्मदिन	चाहत गोयल	25
21.	तरक्की / पहाड़ों की लड़की	ऋषि	26
22.	राष्ट्रलिपि देवनागरी	कुमार रविशंकर	28–29
23.	हिंदी दिवस समारोह (फोटो गैलरी)	––	30–31
24.	शठ सुधरहि सत्संगति पाई	जसवंत कौर	32
25.	सबने देखा है	राजेश शर्मा	33
26.	टोपी	चन्द्र शेखर	34
27.	अद्‌भुत तथ्य	रमन कटोच	34
28.	अनुवाद करता हूं	कुमार रविशंकर	35
29.	कालाअंब अस्पताल की आधारशिला/प्रधानमंत्री श्रमयोगी मानधन	––	36
	योजना का शुभांरभ (फोटो गैलरी)		
30.	दीपावली/महिला दिवस/ध्वजारोहण/योग दिवस (फोटो गैलरी)	––	37
31.	जाने क्या गजब हुजूर कर दिया	राजेश शर्मा	38
32.	चामुंडा माता का मंदिर	सुभाष चंद्र गुप्ता	39
33.	वीरता आत्मविश्वास है/वृक्षों का वास रहने दें/बुराई से अच्छाई की ओर	चीना गुप्ता	40
34.	विश्व महाशक्ति–भारत	दुखमोचन गोपाल	41
35.	जाहू–संगम शहर	राकेश कुमार	41
36.	स्वास्थ्य	नरैण सिंह	42
37.	नजरिया–जीवन जीने का	मनोज तंवर	43
38.	मंजिल तक कैसे पहुंचे	आयुषी ठाकुर	44
39.	बारिश का मौसम/कौन रोक पाएगा मुझे	आशा मेहता	45
40.	विदेशी अभिव्यक्तियां	राजभाषा शाखा	46–48
41.	स्वागत एवं विदाई समारोह (फोटो गैलरी)	––	49
42.	पुरस्कृत कर्मचारी	राजभाषा शाखा	50–52
43.	हिमाचली लोकगीत	––	53
44.	नराकास (फोटो गैलरी)	––	54

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G MARG, NEW DELHI-110002
Website: www.esic.nic.in | www.esic.india.org

अनुराधा प्रसाद
महानिदेशक

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत खुशी हो रही है कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम क्षेत्रीय कार्यालय, बद्दी अपनी गृह पत्रिका हिम–ज्योति का दूसरा अंक प्रकाशित करने जा रहा है। हिंदी भारतीय जनमानस में एकता का भाव पैदा करती है। हिंदी हमारे सबसे बड़े लाभाधिकारी वर्ग की भाषा है।

अतः हिंदी का व्यापक प्रचार–प्रसार सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। मुझे विश्वास है कि हिम–ज्योति अंक –2 क्षेत्रीय कार्यालय, बद्दी में राजभाषा कार्यान्वयन तथा अन्य गतिविधियों का आइना होगा ।

पत्रिका के निरंतर प्रकाशन की कामना सहित।

अनुराधा

अनुराधा प्रसाद

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G MARG, NEW DELHI-110002
Website: www.esic.nic.in | www.esic.india.org

एम.के.शर्मा
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी की गृह पत्रिका हिम–ज्योति का दूसरा अंक प्रकाशित होने जा रहा है ।

हिंदी पत्रिकाएं कार्यालयों में सरकारी काम–काज हिंदी में करने हेतु सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाती है तथा अधिकारियों/कर्मचारियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए भी एक मंच प्रदान करती है ।

पत्रिका अपने उद्देश्य के अनुरूप राजभाषा हिंदी में कार्यालयीन क्रिया–कलापों की सहयोगी हो, इस शुभकामनाओं के साथ ।

म. शर्मा
एम.के.शर्मा

पंछी कभी अपने बच्चों के भविष्य के लिए घोंसले बनाकर नहीं देते, वे तो बस उन्हें उड़ने की कला सिखाते हैं ।

संरक्षक की कलम से...

अपार हर्ष के साथ क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, हिमाचल प्रदेश की गृह पत्रिका हिम–ज्योति का दूसरा अंक 7 वर्षों के अंतराल के बाद आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

इसके लिए मैं सबसे पहले राजभाषा शाखा एवं संपादक मण्डल के प्रयासों को बधाई देता हूं जिसके मेहनत के फलस्वरूप हमारी टीम इस कार्य को प्रतिरूप दे सकी।

हिम–ज्योति पत्रिका कर्मचारी राज्य बीमा निगम क्षेत्रीय कार्यालय बद्दी (हिमाचल प्रदेश) क्षेत्र के साथ देवभूमि हिमाचल को जानने और समझने का भी एक अवसर प्रदान करेगी।

पत्रिका का यह अंक कर्मचारियों के हिंदी प्रेम और उनके लेखन क्षमता का प्रतिबिंब तो है ही साथ ही इस पत्रिका में राजभाषा हिंदी संबंधी लेख तथा कार्यालय की गतिविधियों को भी शामिल करने का प्रयास किया गया है।

मुझे उम्मीद है कि क्षेत्रीय कार्यालय, बद्दी (हि.प्र) की गृह पत्रिका हिम–ज्योति का द्वितीय अंक राजभाषा कार्यान्वयन में सहायक सिद्ध होगा ।आशा है कि पत्रिका का यह अंक आपको पसंद आएगा तथा आप अपने बहुमूल्य सुझावों से हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

पी.के.नरूला
अपर आयुक्त सह क्षेत्रीय निदेशक

प्रभारी राजभाषा अधिकारी की कलम से...

सात वर्षों के अंतराल के बाद हिमाचल प्रदेश की गृह पत्रिका हिम–ज्योति का दूसरा अंक सुधी पाठकों के बीच रखते हुए हम बेहद खुश और उत्साहित हैं। गृह पत्रिका किसी भी कार्यालय की रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रतिबिंब होता है। गृह पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के कार्मिकों को अपनी लेखन कला प्रदर्शित करने का एक मंच मिलता है।

हिमाचल प्रदेश राजभाषा हिंदी के प्रयोग की दृष्टि से 'क' क्षेत्र में आता है। यहां के कर्मचारी हिंदी में कार्य करने में दक्ष हैं। कर्मचारियों में हिंदी में अपने कार्यालयीन कार्य करने की इच्छाशक्ति भी है जिसका प्रमाण उनके द्वारा किए जा रहे मूल कार्य हैं जिसमें हिंदी का ही प्रयोग किया जा रहा है। विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों की सहभागिता भी प्रशंसनीय है।

प्रभारी राजभाषा अधिकारी के रूप में हमारा प्रयास रहता है कि हम अपने कर्मचारियों को हिंदी में सुगमता से कार्य करने के लिए विभिन्न आई.टी. टूल्स से परिचित कराएं तथा प्रोत्साहन योजनाओं में अधिक से अधिक कर्मचारियों की सहभागिता हो।

मैं राजभाषा शाखा तथा कार्यालय के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों का आभार व्यक्त करता हूं जिनके प्रयास से हिम–ज्योति का दूसरा अंक आपके समक्ष रख पा रहे हैं। जिन कार्मिकों की रचनाएं इस पत्रिका के माध्यम से आप तक पहुंच रही है उन्हें विशेष बधाई।

सभी पाठकों से विनम्र निवेदन है कि अपने बहुमूल्य सुझावों एवं विचारों से हमारा मार्गदर्शन करें ताकि पत्रिका के आगामी अंक को हम बेहतर रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत कर सकें।

हरपाल सिंह

(हरपाल सिंह)
सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा)

संपादकीय

आदरणीय पाठकगण,

एक अंतराल के बाद हिम–ज्योति का दूसरा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। हम सबके लिए यह अत्यंत गौरव का विषय है कि हमारा निगम सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में अनेक नए आयामों को प्राप्त कर रहा है। और निरंतर विस्तार एवं प्रगति कर रहा है। हिम–ज्योति का यह अंक हिमाचल प्रदेश में क.रा.बी निगम की गतिविधियों का वाहक है।

यह हमारा सौभाग्य है कि हम ऐसे संस्थान में कार्य करते हैं जो सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती है तथा हमसे जुड़े ज्यादातर लोग हिंदी बोलने वाले है और जब हम हिंदी में काम करते हैं तो न सिर्फ उन्हें सेवाएं बेहतर मिलती है बल्कि हम राष्ट्र निमार्ण के कार्य में भी कदम बढ़ाते है। हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम हमारे राष्ट्र–प्रेम को भी मजबूत बनाता है। किसी भी व्यक्ति की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति केवल अपनी मातृ भाषा में ही संभव है। गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से अहम है बल्कि कार्यालय के कार्मिकों के अनुभव को शब्द रूप देने के लिए एक सुदृढ़ एवं सबल मंच है।

हिम–ज्योति के इस अंक के आवरण पृष्ठ पर हिमाचल प्रदेश में मनाया जाने वाला विश्व प्रसिद्ध कुल्लू दशहरा का चित्र इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौंदर्य एंव समृद्धशाली परंपरा का प्रतिबिंब है।

मैं उन सभी रचनाकारों का आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने पत्रिका हेतु लेख/कविताएं आदि भेजकर पत्रिका में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी सभी वरिष्ठ अधिकारियों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त करता हूं जिनके मार्गदशर्न एवं प्रयास से पत्रिका का नया अंक अस्तित्व में आया।

आपकी प्रेरणा, सुझाव और सहयोग से भविष्य में भी इस पत्रिका को शीर्ष स्तर तक पहुंचाने का निरंतर प्रयास करते रहेंगे।

कुमार रविशंकर
वरिष्ठ अनुवादक

हिमाचल प्रदेश में कर्मचारी राज्य बीमा योजना

पी.बी.गुरूंग, उप निदेशक

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत कर्मचारी राज्य बीमा निगम एक संविधिक निकाय है जो कि भारतीय श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा व स्वास्थ्य बीमा योजना उपलब्ध करवा रहा है। कर्मचारी राज्य बीमा योजना, कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम में सामाजिक बीमा का एकीकृत उपाय है। इसे कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 में परिभाषित 'कर्मचारियों' को बीमारी, प्रसव, अपंगता तथा नौकरी के दौरान चोट लगने से मृत्यु जैसे खतरों से बचाने तथा बीमाकृत व्यक्ति एवं उसके परिवार के सदस्यों को चिकित्सा सुविधा प्रदान करने जैसे कार्यों को पूरा करने के लिए तैयार किया गया है। यह योजना हिमाचल प्रदेश में जून 1977 से प्रभावी हुआ।

शुरूआत में हिमाचल प्रदेश क्षेत्र में क.रा.बी.निगम कार्यान्वयन का कार्य क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब से होता था। वर्ष 2004 में क.रा.बी.निगम क्षेत्रीय कार्यालय हिमाचल प्रदेश स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में अस्तित्व में आया। हिमाचल प्रदेश के कुल 12 जिलों में से सात जिलों यथा शिमला, सोलन, सिरमौर, ऊना, बिलासपुर, कांगड़ा तथा मंडी में वर्तमान में क.रा.बी.योजना क्रियान्वित है।

सुखी लोगों के पास जीवन में सबकुछ नहीं होता है परंतु वे ऐसा वातावरण तैयार करते हैं जो उन्हें प्रसन्न रखता है।

क्षेत्रीय कार्यालय	शाखा कार्यालय डी.सी.बी.ओ.	अस्पताल	भुगतान कार्यालय	औषधालय	अस्पताल
1. बद्दी	1.बद्दी	1.क.रा.बी. निगम आदर्श अस्पताल, काठा (बद्दी)	1. चंबा घाट शा.का.परवाणु	1. भुड (बद्दी) 2. झारमाजरी (बरोटीवाला)	1.क.रा.बी. अस्पताल परवाणु
	2.नालागढ़		2. शिमला शा.का. परवाणु	3. नालागढ़ (सोलन)	
	3.परवाणु		3 दाड़लाघाट डी.सी.बी.ओ. मंडी	4. चंबाघाट (सोलन)	
	4.काला–अंब		4 गग्रेट शा.का.मेहतुर	5. जाबली (सोलन)	
	5.पांवटा साहिब		5 संसारपुर टेरेस (शा.का. मेहतपुर)	6. दाड़लाघाट (सोलन)	
	6.मैहतपुर 7. मंडी डी.सी.बी.ओ.			7. कसौली (सोलन) 8. शिमला 9. शोघी (शिमला) 10 पातलियां, पांवटासाहिब 11. गोंदपुर पांवटासाहिब 12 कालाअंब (सिरमौर) 13. मेहतपुर (ऊना) 14. गग्रेट (ऊना) 15. टाहलीवाल (ऊना) 16. संसारपुर टैरेस (कांगड़ा) 17. पंजगाईन (विलासपुर)	

1 क्षेत्रीय कार्यालय, 6 शाखा कार्यालयों, 01 आदर्श अस्पताल, 1 अस्पताल, 17 औषधालयों के अतिरिक्त 5 भुगतान कार्यालय, तीन पी.एच.सी तथा दो सी.एच.सी तथा एक औषधालय सह शाखा कार्यालय के द्वारा हिमाचल प्रदेश राज्य में क.रा.बी.निगम एक मिश्रित नेटवर्क के माध्यम से 3 लाख 76 हजार सात सौ चार बीमाकृत व्यक्तियों तथा 14.5 लाख से अधिक लाभाधिकारियों को सामाजिक सुरक्षा के तहत विभिन्न प्रकार के हितलाभों को मुहैया कराती है।

लाभाधिकारियों को योजना का अधिक से अधिक लाभ मिले इसके लिए द्वितीयक चिकित्सा तथा अति विशिष्ट चिकित्सा के लिए हिमाचल प्रदेश तथा निकटवर्ती क्षेत्र के प्राइवेट अस्पतालों से टाइ–अप भी किया गया है जिसे समय–समय पर अद्यतन किया जाता है।

कहने के लिए तो हिमाचल प्रदेश एक छोटा क्षेत्र है परंतु पहाड़ी दुर्गमता तथा साधन की न्यूनता के बावजूद यह क्षेत्र एक स्वस्थ कार्यबल तैयार करने के लिए तत्पर है।

क्षेत्रीय कार्यालय, बद्दी (हिप्र) द्वारा

विशेष सेवा पखवाड़ा-2020 का आयोजन

ई.एस.आई. मना रहा है स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक सुरक्षा के 68 वर्ष

निगम में लागू राजभाषा हिंदी के प्रयोग से संबंधित विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का संक्षिप्त विवरण

—राजभाषा शाखा, क्षेत्रीय कार्यालय, बद्दी

भारत सरकार की राजभाषा नीति का लक्ष्य है कि सरकारी कार्यालयों में मूल कार्य हिंदी में हो। राजभाषा नीति के क्रियान्वयन का आधार तीन प्र अर्थात प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा प्रशिक्षण है। निगम में इन्हीं दिशा–निर्देशों का अनुसरण करते हुए अपने अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए कुछ प्रोत्साहन योजनाएं चला रखी हैं। निगम में लागू विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का विवरण निम्न है–

1. कर्मचारी राज्य बीमा निगम हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन योजना – इस योजना में भाग लेने वाले कार्मिकों को अपने नियंत्रण अधिकारी के माध्यम से प्रतिहस्ताक्षरित प्रमाणपत्र देना होता है कि उक्त कर्मचारी ने कैलेंडर वर्ष के दौरान अपने कार्यालय का दैनिक कार्य निर्धारित प्रतिशतता ('क' क्षेत्र के लिए 100 प्रतिशत, 'ख' क्षेत्र के लिए 75 प्रतिशत तथा 'ग' क्षेत्र के लिए 50 प्रतिशत) में हिंदी में किया है। इस योजना में ₹600/– के पुरस्कार की व्यवस्था है।

2. राजभाषा कार्यान्वयन सुझाव पुरस्कार योजना – इस प्रतियोगिता में निगम मुख्यालय द्वारा राजभाषा के प्रसार व संवर्धन के निमित्त निगम कार्मिकों से राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित सुझाव मांगे जाते हैं। यदि समिति कर्मचारी द्वारा दिए गए सुझावों को उपयोगी समझती है तो अधिकतम ₹3000/– और न्यूनतम ₹600/– तक की राशि पुरस्कार के रूप में स्वीकृत किए जाते हैं। इस योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष कुल मिलाकर ₹12000/– तक के पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

3. मूल हिंदी टिप्पण व आलेखन प्रोत्साहन योजना – इसमें कार्मिक को पूरे वित्त वर्ष के दौरान हिंदी में लिखी गई टिप्पणियों/मसौदों का रिकार्ड रखना होता है। वर्ष में न्यूनतम 20,000 ('क' एवं 'ख' क्षेत्रों में) या 10,000 ('ग' क्षेत्र में) शब्दों को लिखने वाले कार्मिकों से प्राप्त प्रविष्टि का मूल्यांकन किया जाता है। इसमें मूल्यांकन के लिए कुल 100 अंक होते हैं जिसमें शब्दों की मात्रा के लिए 70 तथा विचारों की स्पष्टता के लिए 30 अंक होते हैं। इस प्रतियोगिता में प्रथम–2 पुरस्कार – ₹5000/– द्वितीय 3 पुरस्कार ₹3000/– तथा तृतीय–5 पुरस्कार ₹2000/– के कुल 10 पुरस्कार दिए जाते हैं।

4. अधिकारियों के लिए हिंदी श्रुतलेखन (डिक्टेशन) प्रोत्साहन योजना – इस योजना में अधिकारी को एक वित्त वर्ष में कम से कम 100 डिक्टेशन हिंदी में देनी होती हैं और प्रत्येक डिक्टेशन में कम से कम 10 पंक्तियां अवश्य होनी चाहिए। इस प्रतियोगिता में ₹5000/– के कुल दो पुरस्कारों की व्यवस्था है–एक हिंदी भाषी श्रेणी तथा एक हिंदीत्तर भाषी श्रेणी के लिए।

5. अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी में भी सरकारी कामकाज करने के लिए आशुलिपिकों तथा टंककों के लिए प्रोत्साहन योजना – इस योजना के अधीन एक निर्धारित मात्रा (हिंदी में औसतन 5 टिप्पणियां/ प्रारूप/पत्र प्रतिदिन अथवा 300 टिप्पणियां/ प्रारूप/पत्र प्रति तिमाही टाइप करना) में सरकारी कार्य हिंदी में करने के लिए अंग्रेजी आशुलिपिकों/टाइपिस्टों को क्रमशः ₹240/– तथा ₹160/– प्रतिमाह विशेष प्रोत्साहन भत्ता स्वीकार किया जाता है।

6. हिंदी टंकण प्रशिक्षण– हिंदी टंकण प्रशिक्षण के पश्चात् परीक्षा में उतीर्ण होने पर एक वेतनवृद्धि के बराबर 12 महीने तक वैयक्तिक वेतन दिया जाता है। इसके साथ–साथ परीक्षा परिणाम में 97 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर ₹2400/–, 95 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर ₹1600/–, 90 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर ₹800/– के नगद पुरस्कारों की व्यवस्था है।

7. हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण– हिंदी आशुलिपिक प्रशिक्षण में उत्तीर्ण होने पर आशुलिपिक को एक वेतनवृद्धि के बराबर 12 महीने तक वैयक्तिक वेतन

दिया जाता है। इसके साथ–साथ परीक्षा परिणाम में 95 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर ₹2400/–, 92 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर ₹1600/–, 88 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर ₹800/– के नगद पुरस्कारों की व्यवस्था है। जिन आशुलिपिकों की मातृभाषा हिंदी नहीं है उन्हें पहले 12 महीनों के लिए 2 वेतनवृद्धि और अगले 12 महीनों के लिए पहली वेतनवृद्धि को मिला दिए जाने पर एक वेतनवृद्धि के बराबर वैयक्तिक वेतन दिया जाता है।

8. राजभाषा विभाग से प्राप्त अनुदेशों के अनुसार प्रत्येक कार्यालय में 01 सितंबर से 14 सितंबर तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया जाता है तथा 14 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है। राजभाषा पखवाड़े के दौरान निगम कार्यालयों में निम्नलिखित 4 प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

1. हिंदी निबंध प्रतियोगिता
2. हिंदी वाक् प्रतियोगिता
3. हिंदी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता
4. राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता

उपरोक्त चारों प्रतियोगिताओं में हिंदी तथा हिंदीत्तर भाषी प्रतिभागियों के लिए अलग अलग ₹1800/–, ₹1500/– तथा ₹1200/– के प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार तथा ₹500/– के 2 प्रोत्साहन पुरस्कार की व्यवस्था है।

अन्य पुरस्कार/प्रोत्साहन योजनाएं

1. निगम कार्यालय में राजभाषा नीति के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए अंतर अनुभागीय शील्ड की व्यवस्था।

2. राजभाषा नीति के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु निगम इकाईयों के लिए आयोजित राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता।

3. निगम मुख्यालय द्वारा अधीनस्थ इकाइयों के लिए आयोजित 'क्षेत्रवार सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका का चयन प्रतियोगिता'।

4. **राजभाषा कीर्ति पुरस्कार** (राजभाषा विभाग द्वारा) मंत्रालय/विभाग के लिए 300 से कम स्टाफ तथा 300 से अधिक स्टाफ प्रत्येक के लिए 3 शील्ड।

'सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लिए 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्रों में स्थित उपक्रम के लिए 3–3 शील्ड।

'बोर्डों/स्वायत्त निकायों/ट्रस्ट आदि के लिए 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्रों में स्थित उपक्रमों के लिए 3–3 शील्ड।

'राष्ट्रीयकृत बैंकों के लिए 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र के लिए प्रथम तथा द्वितीय पुरस्कार के लिए कुल 6 शील्ड।

'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के लिए 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र में स्थित एक–एक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के लिए 03 शील्ड।

'हिंदी गृह पत्रिका के लिए 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र में प्रथम तथा द्वितीय पुरस्कारों के लिए कुल 06 शील्ड।

5. **राजभाषा गौरव पुरस्कार** (राजभाषा विभाग द्वारा)

'विज्ञान एवं तकनीकी विषयों को बढ़ावा देने के लिए भारत के नागरिकों को हिंदी में ज्ञान–विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन हेतु प्रथम पुरस्कार 02 लाख रूपए, द्वितीय पुरस्कार 1.25 लाख रूपए, तृतीय पुरस्कार 75 हजार रूपए तथा प्रोत्साहन पुरस्कार 10 हजार रूपए और सभी विजेताओं को प्रमाणपत्र तथा स्मृति चिन्ह।

' केंद्र सरकार के कार्मिकों (सेवानिवृत सहित) को हिंदी में मौलिक हिंदी पुस्तक लेखन के लिए प्रथम पुरस्कार 100,000 रूपए, द्वितीय पुरस्कार 75,000/– रूपए, तृतीय पुरस्कार 60,000/– रूपए, प्रोत्साहन पुरस्कार 30,000/– रूपए तथा सभी विजेताओं को प्रमाणपत्र तथा स्मृति चिन्ह।

'केंद्र सरकार के कार्मिकों (सेवानिवृत सहित) को हिंदी में उत्कृष्ट लेख के लिए हिंदी भाषी वर्ग में प्रथम पुरस्कार 20,000/– रूपए , द्वितीय पुरस्कार 18,000 रूपए तथा तृतीय पुरस्कार 15,000/– रूपए। इसके अतिरिक्त हिदीत्तर भाषी वर्ग में प्रथम पुरस्कार 25,000/– रूपए, द्वितीय पुरस्कार 22,000/– रूपए तथा तृतीय पुरस्कार 20,000/– रूपए ।

वर्ष 2019-20 में क्षेत्रीय कार्यालय, बद्दी में आयोजित

राजभाषा हिन्दी कार्यशाला

वर्ष 2019-20 में क्षेत्रीय कार्यालय, बद्दी में आयोजित
राजभाषा हिन्दी कार्यशाला

एक संकल्प–साक्षरता

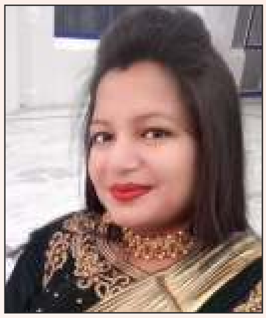

चीना गुप्ता
सहायक

सब स्थितियों के लिए बहुमूल्य है साक्षरता
सीखें हरेक क्षेत्र में इससे आत्मनिर्भरता
पढ़ना–लिखना है सबका मौलिक अधिकार
शिक्षा पूरी करके ही हर सपना साकार
सफल अगर होना है जीवन में कर लो पढ़ाई
वेद, पुराणों और गुरूकुल ने यही बात समझाई
साक्षरता है अमूल्य उपहार, हर मुश्किल पर गहरा प्रहार
हरेक मंजिल का एक आधार, घर–घर बांटे ये उपहार
ले लो शपथ हर ओर साक्षरता फैलाएंगे
बालक, महिला या हो वृद्ध सबको खूब पढ़ाएंगे
घर–घर जाकर सब यही दीप जलाओ
गांव–गांव में शिक्षा की जागृति लाओ।

एक संदेश– युवाशक्ति

ओ देश के नौजवां, तुम्हें पुकार रही भारत मां
क्यों आलस्य से भरा है तू, क्यों अज्ञान के अंधेरे में पड़ा है तू
तू ही इस देश की पतवार है, क्यों तेरे चेहरे पर लिखी हार है
क्यों नहीं छोड़ देता नशे के आतंक को
जो क्षीण कर रहा शरीर व अंतर्मन को
यूं तो तू अंदर तक टूट जाएगा,
तेरी सफलता का हर बांध टूट जाएगा
तेरे दम से ही इस देश की बुनियाद है,
संभल जा यही सबकी फरियाद है
याद कर अपना बचपन जो कितना खुशहाल था
खेल के मैदान में मस्ती के रंग से मालामाल था

छोड़ दे इस नशे के जंग को, जी ले खुशी से जीवन रंग को
तुझसे ही मां बहनों की रक्षा की आशा,
क्यों भर रहा उनके जीवन में निराशा
तेरी वास्तविक शक्ति को पहचान, यही महान् संतों का आह्वान्
तुझसे ही है देश की आन, उठ जाग मेरे युवा महान्।

ज्ञान अतीत की व्याख्या करने के लिए नहीं बल्कि भविष्य का निर्माण करने के लिए होता है ।

ब्रजेश्वरी माता मंदिर

सन्नी मल्होत्रा, सहायक

मां कांगड़ा देवी का मंदिर 51 शक्तिपीठों में से एक है। यह मंदिर हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में स्थापित है। इस मंदिर को नगरकोट देवी या कांगड़ादेवी मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर की नींव पांडव काल में रखी गई थी। इस स्थान पर माता का बांया वक्ष गिरा था। जिसके पीछे यह कथा है कि माता सती के पिता ने एक विशाल हवन का आयोजन किया था। इसमें दूर देश के राजाओं तथा कई बड़े ऋषियों को आमंत्रित किया गया था लेकिन माता सती के पति भगवान शिव को आंमत्रित नहीं किया गया था। माता सती अपने पति का यह अपमान सहन नहीं कर पाई और उन्होंने उसी हवन कुंड में छलांग लगा दी और अपने प्राण त्याग दिए तब भगवान शिव सती के मृत शरीर के लेकर ब्रहांड में घूमे। इसी दौरान भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से माता सती के मृत शरीर को टुकड़े–टुकड़े कर दिए। जो टुकड़ा इस स्थान पर आकर गिरा था वही ब्रजेश्वरी देवी मंदिर कहलाया।

माता कांगड़ा देवी के मंदिर में हर वर्ष मकर संक्राति के अवसर पर मेला का आयोजन होता है। मकर संक्रांति के दिन माता के पिंड के ऊपर कई क्विंटल मक्खन चढ़ाया जाता है। इसके पीछे की मान्यता यह है कि माता ने जब महिषासुर राक्षस का वध किया था तो युद्ध के दौरान माता को भी कुछ घाव लगे थे जिन्हें ठीक करने के लिए देवी–देवताओं ने माता को मक्खन रूपी घृत का लेप लगाया था। इसके बाद से यह परंपरा चली आ रही है। महिषासुर का वध करने के बाद माता को महिषासुर मर्दिनी के नाम से भी जाना जाता है। इसी कारण से इस मंदिर के पिंड के पीछे अष्टादश भुजा मूर्ति स्थापित की गई है। इस तरह की मूर्ति अन्य किसी शक्ति पीठों में नहीं है। मंदिर में चढ़ाए गए मक्खन को एक सप्ताह बाद भक्तों को प्रसाद के रूप में बांट दिया जाता है। कहते हैं कि इस प्रसाद को अगर किसी चर्म रोग के स्थान पर लगाया जाए तो वह रोग ठीक हो जाता है। यह भी कहा जाता है कि दैत्यराज जालंधर भी इसी जगह दफन है।

महाराजा रंजीत सिंह ब्रजेश्वरी माता के बड़े भक्त थे। उनके द्वारा चढ़ायी गई सोने की मूर्ति मंदिर में आज भी विद्यमान है। मंदिर की संपदा को देखकर महमूद गजनवी ने पांच बार इस मंदिर को लूटा। अंग्रेज वायसराय लार्ड इरविन भी इस मंदिर में आकर पूजा की थी तथा वस्त्र चढ़ाया था जो मंदिर में आज भी मौजूद है। अफगानिस्तान के एक राजा ने संवत् 5 में एक पांडुलिपि शिलालेख इस मंदिर में दिया था जो अभी भी यहां मौजूद है। उत्तर प्रदेश के एक भक्त ध्यानु भगत ने इस मंदिर में अपना शीश काटकर चढ़ाया था। कहते हैं कि उस भक्त का शीश फिर से जुड़ गया था। तब से उस क्षेत्र के लोग माता ब्रजेश्वरी देवी को अपना कुलदेवी मानते हैं तथा पीले वस्त्र पहनकर माता की पूजा के लिए आते हैं। लगभग पचास वर्ष पूर्व एक भक्त ने यहां अपनी जिव्हा काटकर चढ़ा दिया था। इसके एक सप्ताह के बाद उस भक्त का जीह्वा फिर जुड़ गया था। इसके बाद से मंदिर के पुजारियों के द्वारा ऐसा करने से सखत मना कर दिया था। सिख धर्म के भाटरा समुदाय के लोग भी इस माता को अपना कुलदेवी मानते हैं तथा अपने बच्चे का मुंडन कराने यहां आते हैं।

सन् 1905 के भूकंप में यह मंदिर टूट गया था जिसके बाद इस मंदिर का निर्माण फिर से किया गया है। नगर कोट का यह धाम पवित्र माना जाता है तथा यहां साल भर भक्तों की भीड़ लगी होती है।

लिखो कवि लिखो

विकास कुमार, सहायक

लिखो कवि लिखो तुमसे बड़ी अपेक्षाएं है सभी को,
तुम शब्दों के कारीगर हो इस तरह मत थको, उठो फिर से शब्द चुनो।
शब्द बुनोगे, साहित्य सजेगा, लोग पढ़ेंगे समाज जागेगा,
शब्द तुम्हारे असला हैं कलम तुम्हारी तलवार,
तराशो अलफाज को कलम को दो धार।
तुम्हारी कविताओं में लोग अपना आईना ढूंढ़ते हैं कि उनका दुख जाने,
लिखो कवि दर्द लिखो, अपने आंसुओं से लिखो।
लोग चंद हंसी के पल खोजते हैं कुछ घड़ी तो ठहाकों में बीत जाए,
लिखो कवि, हास्य लिखो कभी खिलखिला के भी लिखो।
जो व्यापार करते हैं धर्म का, ईमान का आत्मा का,
उनके लिए व्यंग्य लिखो गुस्से को अपने निचोड़ कर लिखो।
देखो युवा रक्त तरल है अपनी दिशा ढूंढ़ता है,
लिखो कवि लिखो क्रांति लिखो अपना लहू उबाल के लिखो।
उगते सूरज ने कुछ बीज बिखेरे हैं। चिंगारियों के उनसे लपटों की फसल उगानी है,
न सही तुम वाल्मिकी, तुलसीदास, शेक्सपीयर उन्हें भी कहां पता होगा।
कि उनका काव्य कालजयी हुआ, तुम तो अपनी सच्चाई लिखो, अंतर्मन हृदय से लिखो,
क्या पता तुम्हारी कलम भी कभी समय का प्रवाह मोड़ दे, दिलों को आपस में जोड़ दें।
किसी के आंसू रोक दें किसी को मुस्कुराहट दे किसी को प्रेरणा,
देखो स्याही सूख न जाए कलम तुम्हारी टूट न जाए, शब्द कहीं रूठ न जाए।
कविता ही है प्राण तुम्हारा, लिखो कवि लिखते रहो।

जिजिविषा

बार–बार करता है कोई वार
तिलमिलाता, छटपटाता, कुछ छूटता है जैसे
एक उदास आवेग जकड़ता है मुझे
चुल्हे से उठती भाप जैसा
सीझता हूं मैं एक आंच में
दूर से आती एक मद्यम सी हंसी
हर जकड़न को लहकाती है जैसे
क्या हथियारों के भी रंग होते हैं
जो वेश बदलकर छिप जाते हैं दुखों के कैनवास पर
एक हरे और लाल की सलामती के लिए
सुख से करता हूं मैं वार बार–बार बारंबार

सफलता न तो कोई जादू है न ही कोई रहस्य है, सफलता अच्छी आदतों का एक सहज परिणाम है ।

राजभाषा पखवाड़ा-2019

राजभाषा प्रदर्शनी-2019

विराकास बैठक: फरवरी-2020

राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस-2019

जिस स्वतंत्रता में गलती कर पाने का अधिकार शामिल नहीं हो उस स्वतंत्रता का कोई मूल्य नहीं ।

पराशर झील
रहस्य और प्राकृतिक अचरज

हरपाल सिंह, सहायक निदेशक

प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर पराशर झील हिमाचल प्रदेश का एक बहुत ही खूबसूरत पर्यटन स्थल है। समुद्र तल से 8957 फुट ऊंचाई पर बसे इस मनोरम स्थल का अपना धार्मिक महत्व भी है। नीले पानी की झील और उसमें टिहला (तैरता भूखंड) किसी आश्चर्य से कम नहीं। नदी व्यास का निर्मल जल यहां मन को शांत और मंत्रमुग्ध कर देता है।

हिमाचल प्रदेश का काशी कहा जाने वाला शहर मंडी से 50 कि.मी. दूर प्रकृति के गोद में स्थित है पराशर झील। कहा जाता है कि ऋषि वशिष्ठ के पौत्र पराशर ऋषि तपस्या करने के लिए शांत स्थान की तलाश में इस पहाड़ पर पहुंचे। यहां बैठकर तपस्या करते रहे। जब उन्हें प्यास लगी तो उन्होंने अपना कुंड जमीन पर मारा तो पानी की एक धारा प्रकट हुई। पानी की यह धारा झील में तब्दील हो गई। परंतु जहां पराशर ऋषि बैठे थे जमीन का वह हिस्सा झील नहीं बना और झील के बीच भूखंड का रूप ले लिया।

कहा यह भी जाता है जिस तरह सूर्य 365 दिनों में पृथ्वी का एक चक्कर लगाता है यह जमीन का टुकड़ा भी झील का चक्कर लगाता है। हालांकि कभी–कभी यह एक स्थान पर रूक जाता है। इसके पानी में चलने को पाप और पुण्य से जोड़कर भी देखा जाता है। सर्दियों में जब यहां बर्फ जम जाती है तब भी झील का पानी नहीं जमता। मान्यताओं के अनुसार झील का पानी रोग निवारण का भी माध्यम है।

झील के पास एक पैगोडा मंदिर भी है जिसका जीर्णोद्धार 14वीं सदी में राजा बानसेन ने किया था। पारंपरिक निर्माण शैली मे दीवारों में पत्थरों के साथ लकड़ियों की कड़ियों के प्रयोग इस मंदिर के अनूठे कलात्मकता को दर्शाती है। मंदिर के बाहरी ओर व स्तंभों पर की गई नक्काशी अद्भुत है। इनमें उकेरे देवी–देवता, सांप, पेड़–पौधे, फूल, बेल पत्र, बर्तन व पशु पक्षियों के चित्र क्षेत्रीय कारीगरी को दर्शाते हैं।

यहां से पीर पंजाल, धौलाधार और किन्नोरी पर्वत श्रंखलाओं का नजारा भी लिया जा सकता है यहां हर वर्ष आषाढ़ की संक्रांति व भाद्रपद की कृष्णपक्ष की पंचमी को मेला लगता है।

इस स्थल का सौंदर्य एकांकी व अछूता है। यहां आने वाली गाड़ियों को झील से थोड़ा पहले की रूकना होता है फिर पैदल ही झील तक पहंचना होता है। यही कारण है कि इस क्षेत्र का प्राकृतिक सौंदर्य बना हुआ है। पराशर झील अपने आप में कई धरोहर, चमत्कार और देवी शक्ति संजोए है जो यहां आने वाले पर्यटकों को अचरज और अद्भुत अनुभव से मंत्रमुग्ध कर देती है।

भारत में सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था

ब्रज भूषण चौधरी, उच्च श्रेणी लिपिक

श्रम और उत्पादन परस्पर सह संबंधित अवधारणाएं हैं। प्रत्येक उत्पादन प्रणाली में श्रम की पद्धतियां भिन्न–भिन्न होती है इसलिए भिन्न भिन्न श्रम–संबंध देखने को मिलते हैं।

उत्पादन के तीन मुख्य स्वरूप प्रचलित हैं – प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र एवं तृतीयक क्षेत्र (सेवा क्षेत्र)। उत्पादन के प्राथमिक क्षेत्र का आशय श्रम आधारित उत्पादन प्रणाली से है। कृषि प्रधान हमारे देश में इसलिए अधिकांश उत्पादन इकाईयों में श्रमिकों का प्रभाव देखा जा सकता है। भारत में श्रमिकों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। श्रमिक संगठित, असंगठित, खेतिहर आदि कई श्रेणियों में वर्गीकृत किए जा सकते हैं। अधिकृत सरकारी आंकड़ों के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था में लगभग 48.7 करोड़ श्रमिक कार्यरत हैं जो दुनियां में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। इन श्रमिकों में से करीब 94 प्रतिशत श्रमिक असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं।

श्रम मंत्रालय, भारत सरकार की एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार भारत में असंगठित श्रमिकों को चार भागों में विभाजित किया गया है –

1. व्यवसाय आधारित श्रमिक

2. रोजगार के प्रकृति के आधार पर वर्गीकृत श्रमिक

3. निम्न प्रकार के कार्यों में संलग्न श्रमिक

4. सेवा कार्यों में कार्यरत श्रमिक

भारतीय अर्थव्यवस्था में अधिकांश श्रमिक असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं। असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों से तात्पर्य ऐसे श्रमिकों से है जो रोजगार या जीवनयापन के अस्थाई स्वरूप एवं बिखरे हुए प्रतिष्ठानों में कार्यरत हैं। जो अज्ञानता, निरक्षरता एवं अस्थायित्व के कारण स्वयं को संगठित नहीं कर पाए हैं। असंगठित क्षेत्र के ऐसे श्रमिक कृषि, निर्माण, विनिर्माण, व्यापार, परिवहन, संरचना एवं सेवा क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

भारत में खेतिहर मजदूर

प्रथम खेतिहर मजदूर जांच समिति ने मजदूरों को दो श्रेणियों में रखा है –

क) स्थायी मजदूर–स्थाई मजदूर किसान परिवार के साथ लिखित या मौखिक ठेके द्वारा बंधा होता है।

ख) अस्थाई मजदूर–यह किसी भी किसान के लिए कार्य करने को स्वतंत्र होते हैं।

सन् 1881 की जनगणना के अनुसार उस समय खेती में कार्य करने वाले मजदूरों की संख्या 75 लाख थी। 2011 की जनगणना के अनुसार कृषि श्रमिकों की संख्या कुल श्रम–शक्ति का एक चौथाई है। इस प्रकार श्रम–शक्ति का हर चौथा मजदूर खेतिहर मजदूर है।

भारत में खेतिहर मजदूरों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। इसके जनाधिक्य के अनेक कारण हैं जैसे पूंजीवादी कृषि, कुटीर उद्योगों और हस्तकारों का पतन, जनसंख्या में वृद्धि, छोटे किसानों और काश्तकारों का भूमि से वंचित होना, मुद्रा और विनिमय प्रणाली का विस्तार और ऋणग्रस्तता में वृद्धि।

अतः खेतिहर मजदूरों की स्थिति और समस्याएं जैसे ऋणग्रस्तता, श्रम शक्ति का अनियमित एवं अनिशिचित होना, रोजगार एवं काम की न्यायिक अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं रहना , मजदूरी और कम आय। हरित क्रांति के कारण खेतिहर मजदूरों के मजदूरी में वृद्धि हुई है। मौद्रिक आय में कुछ खास वृद्धि का लाभ नहीं हुआ। मालिक और मजदूर का संबंध, प्रवासी श्रमिकों की संख्या में वृद्धि, बाल श्रमिकों की अत्यधिक संख्यां आदि मजदूरों के इस स्थिति का जिम्मेदार है।

सरकार ने खेतिहर मजदूर की आर्थिक स्थिति को ठीक करने में दिलचस्पी दिखाई है और इस दृष्टि से कई उपाय किए गए हैं – जैसे भूमिहीन खेतिहर मजदूरों को भूमि देना, बंधक श्रम का उन्मूलन, न्यूनतम मजदूरी का निर्धारण, रोजगार के विशेष कार्यक्रम आदि। रोजगार के विशेष कार्यक्रम की विशेष एजेंसियों के विकास द्वारा सरकार के द्वारा समय समय पर खेतिहर मजदूरों की स्थिति सुधारने के उपाय किए जाते हैं।

असंगठित श्रमिकों के कल्याण हेतु सरकार ने कानून बनाए हैं – जैसे न्यूनतन मजदूरी कानून, 1948, बंधुआ मजदूर प्रथा अधिनियम,1976, ठेका मजदूर अधिनियम, मातृत्व लाभ अधिनियम,1961, कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम,1948। संगठित क्षेत्र के श्रमिकों के कल्याण हेतु सामाजिक सुरक्षा योजना को दो श्रेणियों में रखा गया है–

सामाजिक सुरक्षा एवं सामाजिक सहायता

सामाजिक बीमा की योजनाओं के लिए प्रायः कर्मचारियों, नियोजकों और राज्य द्वारा अंशदान किया जाता है। इन योजनाओं से मिलने वाले लाभ प्रायः कर्मचारियों, नियोजकों और राज्य द्वारा अंशदान किया जाता है। इस योजना से मिलने वाले लाभ प्रायः कर्मचारियों जिनका बीमा होता है उसके योगदान से जुड़ा था।

सामाजिक सहायता की योजनाओं के अंतर्गत गरीब और जरूरतमंद लोगों को आर्थिक सहायता दी जाती है। और इसके लिए किसी तरह का योगदान या शर्त नहीं होता है।

भारत में सामाजिक सुरक्षा की अधिकत्तर योजनाएं पहली श्रेणी में आती है जैसे –

कर्मचारी क्षतिपूर्ति अधिनियम 1923

भारत में सामाजिक सुरक्षा की शुरूआत 1923 में हुई जब श्रमिक क्षतिपूर्ति अधिनियम पारित किया गया।

मातृत्व लाभ अधिनियम 1961

मातृत्व लाभ अधिनियम कुछ विशेष उद्योगों में महिला श्रमिकों को मातृत्व लाभ की व्यवस्था करता है। इस अधिनियम के अंतर्गत महिला श्रमिकों को 26 सप्ताह

तक मजदूरी सहित छुट्टी पाने का अधिकार है।

कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948

इस अधिनियम के तहत दुकान या स्थापना आते हैं जिसमें कम से कम 10 कर्मचारी कार्यरत हों। यह अधिनियम संगठित क्षेत्र के लिए है। इसका लाभ उन कर्मचारियों को सामाजिक सुरक्षा लाभ प्राप्त होता है जिसकी मासिक मजदूरी 21000 रूपए से कम है।

कर्मचारी भविष्य निधि तथा विविध धारा अधिनियम 1952

कर्मचारी भविष्य निधि तथा विविध प्रावधान अधिनियम 1952 के अंतर्गत कर्मचारियों का भविष्य निधि, परिवार पेंशन तथा जमा राशि से जुड़े बीमा की व्यवस्थ की गई है।

अन्य योजनाओं में कर्मचारी जमा संबद्ध बीमा योजना, ग्रेच्युटी भुगतान योजना, न्यूनतम पारिश्रमिक अधिनियम आदि आजादी के बाद श्रमिक सुधारों की दिशा में पहला महत्वपूर्ण प्रयास था।

श्रमिकों से जुड़े मुद्दे में उनके कल्याण एवं सर्वांगीन विकास से संबंधित प्रक्रियाओं को शामिल किया जाता है। श्रमिकों की समस्याओं में रोजगार, सुरक्षा,बीमा, स्वास्थ्य एवं शिक्षा संबंधी मुद्दे प्रमुख हैं। इन समस्याओं का निवारण एकीकृत रूप से किए जाने की आवश्यकता है। श्रमिकों के स्वास्थ्य एवं उनके कल्याण के लिए केंद्र तथा राज्य सरकारों को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। हालांकि यूनीफाइड पोर्टल तथा लेबर कोड आदि प्रयास श्रमिकों के कल्याण के लिए हितकारी साबित हो सकते हैं।

एक कर्मचारी सौ बीमारी

सूरज भान
सहायक

एक कर्मचारी सौ बीमारी ई.एस.आई.सी.
अपनाने से हो जाएंगी दूर चिंता सारी

हिमाचल प्रदेश में जब से है ई.एस.आई.सी आई
सभी औद्योगिक कर्मचारियों ने राहत की सांस पाई

आदर्श अस्पताल एवं औषधालयों के माध्यम से संपूर्ण
हिमाचल में बीमितों को चिकित्सा उपलब्ध है कराई

क्षेत्रीय निदेशक की अगुवाई में जागरूकता शिविरों से
बीमितों को संपूर्ण हितलाभों की जानकारी है दिलवाई

इस कारण संपूर्ण हिमाचल प्रदेश में खुश है सभी बीमित भाई
एक ही ई.एस.आई. नंबर को संपूर्ण भारत में चलाना भाई,
दो नंबर होने पर हितलाभ लेने में आएगी कठिनाई

ई.एस.आई.सी मेडिकल कॉलेजों में बीमितों के बच्चे को आरक्षण दे
एम.बी.बी.एस डाक्टर बनाने की मुहिम है चलाई

बीमितों को संपूर्ण चिकित्सा सुविधा दे ई.एस.आई.सी
बीमितों को चिंता से मुक्ति है दिलाई

ई.एस.आई.सी के कारण बीमितों में बीमारियों
से न डरने की शक्ति उत्पन्न हो पाई

अपने अथक प्रयासों से ई.एस.आई. बीमितों की सौ बीमारियों
की संख्या को शून्य पर है ले आई

एक इच्छा कुछ नहीं बदल सकती, एक निर्णय कुछ परिवर्तन ला सकता है, परंतु एक दृढ़ संकल्प सब कुछ बदल सकता है ।

शाखा प्रबंधक बैठक-2019

स्वच्छता पखवाड़ा-2019

नियोजकों के साथ क्षेत्रीय निदेशक की बैठक

माननीय श्रम मंत्री सह अध्यक्ष क्षेत्रीय परिषद श्री विक्रम सिंह से उप निदेशक श्री प्रशांत बैजल एवं श्री पी.बी.गुंरूग की शिष्टाचार भेंट

देहरादून आंचलिक खेलकूद

मूर्ख के लिए क्रोध जोर शोर से प्रकट करने वाली वस्तु है जबकि बुद्दिमान के लिए शांति से वश में करने की ।

चाहत गोयल,
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

मां का जन्मदिन

एक अक्षर में लिखना चाहा
जब मैनें ईश्वर का नाम
जरूरत पड़ी न चिंतन की बस लिख दिया मैनें मां
जिसको बोले लोग स्वर्ग
तुम्हारे कदमों में मेरी वो ठांव

हर जन्म बनो तुम मेरी जननी
बस यही मेरी एक तम्मना
चाहती हूं खास बनाना
तुम्हारा जन्मदिन मेरी मां
कोई कहे तुम्हें जननी
तो ईश्वर का दूत कहे कोई
पर मेरे लिए तो सब कुछ
तुम ही हो मेरी मां

जहां मारा जाए बिना जन्म लिए ही
वहां तुम देती हो पनाह
चाहती हूं खास बनाना
तुम्हारा जन्मदिन मेरी मां
संसार दिखाया मुझे हंसाया
बनी मेरे लिए ठंडी छांव

बेटों की तरह ममता दी
इस बेटी को तुमने मां
रहो हमेशा तुम हंसती मुस्कुराती
दिल देता है बार–बार यही दुआ
मेरी वजह से इक दिन होगा
तुम्हारा इस जग में नाम
चाहती हूं खास बनाना तुम्हारा जन्मदिन मेरी मां

तरक्की

ऋषि, कार्यालय अधीक्षक

जीवन के इस भाग दौड़ ने घराना छुड़वा दिया
इस अजनबी शहर ने एक और अजनबी बना दिया ।
इस भीड़ का मुसाफिर बना हूं अपनों के ठिकाने छोड़कर,
इस शहर के किस कोने में छुपूंगा
उनकी यादों से मुंह मोड़कर ।
तरक्की नहीं तरकीब है ये
समय के जाल में बुनी तस्वीर है ये ।
यह शहर नहीं किराए का मकान है,
जिंदगी की उधेड़ बुन में लगा, यहां हर इंसान है ।
ये मेरा घर नहीं, ये मैं जानता हूं ,
मुस्तकबिल में छुपे रहस्यों को पहचानता हूं ।
डर से कहीं मोहब्बत न हो जाए ये डर लगता है,
भेद जाएगा यह लक्ष्य भी, क्योंकि
घड़ी की सूई का हर एक सेकेंड अब मजहब लगता है ।

पहाड़ों की लड़की

कहीं शहर से दूर, सड़क चली जाती है
पहाड़ों की वादियों में यह, और भी सुंदर नजर आती है।
खुले आसमां का यह समुंदर,
बादलों की लहरों के साथ बह रहा है
ठंडी हवाओं का यह बवंडर, कानों में कुछ कह रहा है
दूर डाली पर बैठा परिंदा, इन पहेलियों को सुलझा रहा है।
हूं हूं करती यह नदियां, अपना ही गीत गाती है
पत्थरों से टकराकर पल भर में बिखर जाती है।
मुकुट सा लगा कर जो बादलों में छुपा है
पहाड़ों का यह मंत्रमुग्ध मंजर देवदारों से बना है।
घूमती हुई यह पगडंडी सबको लुभा रही है
जैसे पहाड़ों की कोई लड़की, नाटी पर थरथरा रही है।
इन इमारतों के अलावा इस शहर में क्या बचा है
स्वर्ग तो अब जा के, इन घाटियों में जा बसा है।

(यह कविता तीर्थन वैली जो कि कुल्लू से 40 कि.मी आगे वंजार के नजदीक है कि हसीन वादियों और अलौकिक प्राकृतिक सौंदर्य के ऊपर लिखी गई है ।इस कविता में प्राकृतिक सौंदर्य की तुलना पहाड़ी लड़की के सौंदर्य से की गई है)

बिना संघर्ष के कोई महान नहीं बनता, पत्थर पर जबतक चोट न पड़े तब तक वह भी भगवान नहीं बनता ।

''अनेक भाषाएं, अनेक बोलियां हमारे देश की सबसे बड़ी ताकत है। परन्तु जरूरत है कि देश की एक भाषा हो, जिसके कारण विदेशी भाषाओं को जगह न मिले। देश की एक भाषा हो इसी दृष्टि को ध्यान मे रखते हुए हमारे पुरखों, हमारे स्वतंत्रता सेनानियों नें राजभाषा की कल्पना की थी और राजभाषा के रूप में हिंदी को स्वीकार किया था। और मैं मानता हूं कि हिंदी को बल देना, हिंदी को प्रचारित करना, हिंदी को प्रसारित करना, हिंदी को संशोधित करना, इसके व्याकरण को शुद्ध करना, इसके साहित्य को एक नए युग के अंदर ले जाना चाहे वह गद्य हो या पद्य हो, यह सब हमारा राष्ट्रीय दायित्व है।''

श्री अमित शाह, गृह मंत्री

ई.एस.आइ.सी. विज़न-2022
संपूर्ण भारत की व्याप्ति
का अभियान

- वर्ष 2022 तक 10 करोड़ कर्मचारियों को व्याप्त करना।
- सभी पात्र स्थापनाओं को सामाजिक सुरक्षा व्याप्ति के अंतर्गत लाना।
- द्वितीयक तथा प्राथमिक चिकित्सा केन्द्रों के नेटवर्क का विस्तार तथा चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार करना।

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय
Ministry of Labour & Employment
भारत सरकार (Government of India)
@labourministry @LabourMinistry

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Government of India)
@esichq @ESICHQ

राष्ट्र लिपि देवनागरी

*"है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी–भरी
हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी"*
मैथिलीशरण गुप्त

कुमार रविशंकर, वरिष्ठ अनुवादक

भाषा और लिपि दोनों ही विचार संप्रेषण के माध्यम हैं। लिपि भाषा पर ही आधारित है क्योंकि भाषा का लिखित रूप ही लिपि है । लिपि भाषा का ही लिखित पर्याय है। भाषा में ध्वनियां श्रव्य रूप में रहती हैं जबकि लिपि में दृश्य रूप में। लिपि जितनी सरल, व्यवस्थित और वैज्ञानिक होगी भाषा उतना ही सक्षम और प्रभावशाली। देवनागरी लिपि को सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिक वैज्ञानिक माना जाता है।

भारत की सभी प्रमुख भाषाओं की लिपियां ब्राह्मी लिपि से ही विकसित हुई हैं। देवनागरी ब्राह्मी लिपि का सबसे व्यापक, विकसित और वैज्ञानिक लिपि है। यही कारण है कि देवनागरी भारतीय भाषाओं के बीच संपर्क लिपि बनने की क्षमता रखती है। इसलिए आधुनिक युग के प्रबुद्ध विचारकों और मनीषियों ने राष्ट्रीय एकता के लिए देवनागरी लिपि को अपनाने की बात कही है।

शारदाचरण मित्र ने देवनागरी को "राष्ट्र लिपि" बताया और अगस्त 1905 में एक लिपि विस्तार परिषद की स्थापना की। लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी ने देश की एकता के लिए एक लिपि की आवश्यकता पर बल दिया। महात्मा गांधी के अनुसार ***"लिपि विभिन्नता के कारण प्रांतीय भाषाओं का ज्ञान असंभव सा हो गया है।"*** आचार्य विनोबा भावे ने नागरी लिपि के महत्व को बताते हुए कहा था ***"हिंदुस्तान की एकता के लिए हिंदी भाषा जितना काम देगी उससे बहुत काम देवनागरी देगी।"*** उनकी प्रेरणा से सन् 1975 में 'नागरी लिपि परिषद' की स्थापना हुई जो देवनागरी लिपि के प्रचार प्रसार का कार्य कर रहा है।

1961 में पं जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में संपन्न मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन में भी यह सिफारिश की गई कि ***"भारत की सभी भाषाओं के लिए एक लिपि अपनाना वांछनीय है इतना ही नहीं यह सब भाषाओं को जोड़ने वाली एक मजबूत कड़ी के रूप में काम करेगी और देश के एकीकरण में सहायक सिद्ध होगी।''***

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ तो हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि को आधुनिक और मानकीकृत करने की आवश्यकता महसूस हुई। किसी भी भाषा का मानकीकरण व्यवस्था उसके मुक्त विस्तार को मर्यादित करता है। देवनागरी लिपि सहज और वैज्ञानिक होने के कारण ही हिंदी की लिपि नहीं है, बल्कि भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित 22 भाषाओं में से संस्कृत, मराठी, नेपाली, बोडो, डोगरी तथा मैथिली भाषाओं की अधिकृत लिपि है। कोंकणी, सिंधी तथा संथाली भाषाएं भी देवनागरी अपना रही है। उर्दू का भी अधिकांश साहित्य देवनागरी लिपि में प्रकाशित हो रहा है। पंजाबी, मणिपुरी और गुजराती भी देवनागरी लिपि में लिखी जा रही है। इनके अतिरिक्त कई भाषाएं और बोलियां जिनकी अपनी लिपि नहीं है देवनागरी उन भाषाओं के बीच सेतु का कार्य कर रही है।

देवनागरी लिपि में विभिन्न ध्वनियों और उनके लिए प्रयुक्त लिपि चिन्हों में सामंजस्य की स्थिति मिलती है। इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग–अलग मात्रा चिन्ह है। इस लिपि की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें जो बोला जाता है वही लिखा जाता है।

देवनागरी लिपि में स्वरों की व्यवस्था में पहले ह्रस्व स्वर फिर दीर्घ स्वर और बाद में अतिरिक्त स्वर आते

हम सभी को अपने–अपने क्षेत्रों में उसी समर्पण, उसी उत्साह, और उसी संकल्प के साथ काम करना होगा
जो कि रणभूमि में एक योद्धा को प्रेरित और उत्साहित करता है ।

हैं। जैसे :

अ अ इ ई उ ऊ ऋ

ए ऐ ओ औ अं अः

देवनागरी लिपि में व्यंजन वर्णों का स्थान स्वर व अतिरिक्त स्वर के बाद आता है । व्यंजन वर्णों को कंठ, तालु,मूद्धा, दंत एवं ओष्ठ से निकलने वाली ध्वनि के आधार पर वर्गीकृत कर इसे पूर्ण वैज्ञानिक बनाया गया है ।

क ख ग घ ङ – कंठ्य

च छ ज झ – तालव्य

ट ठ ड ढ़ ण – मूधर्नय

त थ द ध न – दंत्य

प फ ब भ म – ओष्ठ्य

य र ल व – अतःस्थ वयंजन

श ष स ह – ऊष्म वयंजन

क्ष–क्+ष, त्र–त+र, ज्ञ–ज्+ञ, श्र–श्+र–संयुक्त व्यंजन

देवनागरी लिपि की विशेषता इसकी स्पष्टता है। इसकी प्रत्येक लिखित वर्ण उच्चारित भी होती है। यह लिपि अन्य लिपियों की अपेक्षा सरल व वैज्ञानिक मानी जाती है। यह लिपि वर्णात्मक है। लिप्यांतरण और प्रतिलेखन की दृष्टि से देवनागरी लिपि सर्वश्रेष्ठ है। यूनीकोड के आविष्कार के बाद कंप्यूटर पर भी यह सर्वमान्य है तथा इसका प्रयोग और प्रसार बढ़ा है। कंप्यूटर टंकण को ध्यान में रखते हुए भी देवनागरी लिपि का मानकीकरण किया गया है। भाषाओं के शिक्षण की दृष्टि से भी इस लिपि का सामर्थ्य अदभुत है।

जिस प्रकार भारतीय अंकों को उनकी वैज्ञानिकता के कारण विश्व ने सहर्ष स्वीकार कर लिया वैसे ही देवनागरी भी अपने सामर्थ्य और वैज्ञानिकता के कारण राष्ट्र लिपि और विश्व लिपि बन सकती है ।

हिन्दी दिवस समारोह-2019

गलती हर कोई करता है, लेकिन कई लोग कुछ सीख कर निखर जाते हैं, जबकि कई लोग न सीख कर बिखर जाते हैं ।

हिन्दी दिवस समारोह-2019

शठ सुधरहि सतसंगति पाई

जसवंत कौर, उच्च श्रेणी लिपिक

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में वह अकेला नहीं रह सकता। उसे अनेक लोगों के संपर्क में आना पड़ता है। जिनका प्रभाव उसपर अवश्य पड़ता है। उत्तम प्रकृति के मनुष्यों की संगति 'सत्संगति' कहलाती है। सत्संगति के प्रभाव में दुष्ट भी आकर सुधर जाते हैं इसलिए कहा गया है –

'शठ सुधरहि सत्संगति पाई, पारस पारसि कुधातु सुहाई'

अर्थात जैसे पारस पत्थर के स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है, वैसे ही अच्छे जनों की संगति से शठ भी सुधर जाता है। स्वाति की एक बूंद जब कदली (केले) पर पड़ती है तो कपूर, सीप के मुख में पड़ती है तो मोती पर यदि सर्प के मुख में पड़ जाए तो विष बन जाती है। व्यक्ति जैसी संगति में बैठेगा, वैसा ही फल प्राप्त होगा। कांच का एक टुकड़ा, सोने के संपर्क में आकर मणि की शोभा देता है, कमल के पत्ते पर पड़ी पानी की बूंद मोती की शोभा देती है। लोहे की छोटी सी कील भी पानी में डूब जाती है, पर लकड़ी में जोड़ने पर लोहे के बड़े–बड़े सरिए पानी में तैरने लगते हैं। महापुरूषों तथा सज्जनों की संगति हमारी उन्नति का कारण बनती है, जबकि कुसंगति हमारे पतन का। कुख्यात डाकू अंगुलिमाल महात्मा बुद्ध की संगति पाकर क्रूर कर्म भूल गया। सत्संगति अज्ञान का नाश करती है, वाणी में सत्यता को प्रविष्ट करती है, तथा अनेक गुणों को विकास करती है। इसके विपरीत कुसंगति हमें अधोगति की ओर ले जाती है। कर्ण जैसा महादानी दुर्योधन की संगति में रहकर कर्तव्य–अकर्तव्य को भूल बैठा। कुसंगति का प्रभाव व्यक्ति पर थोड़ा या अधिक अवश्य पड़ता है–

'काजल की कोठरी में कैसो हू सयानो जाए
एक लीक काजर की लागहौ पै लागहि '

इस दोहे का तात्पर्य है कि व्यक्ति कितना भी चौकस हो, कितना भी बुद्धिमान हो, सर्तक हो, लेकिन अगर वह बुरे व्यक्ति का संग करता है तो उसका बुरा प्रभाव पड़ना निश्चित है। मनुष्य का स्वभाव है वह जल की तरह नीचे जाने को सदैव तत्पर रहता है। उसके विचारों, उसके जीवन को सही दिशा देने के लिए सज्जनों का साथ जरूरी है।

व्यक्ति की पहचान उसके मित्रों से होती है जिनके साथ वह उठता बैठता है, समय बिताता है। अगर इंसान उन्नति करना चाहता है, सुख पाना चाहता है तो वह सदैव अच्छे लोगों का साथ करें।

इतिहास में ऐसे कई उदाहरण जब भटका हुआ हुआ व्यक्ति सत्संगति के कारण राह पर आ गया। ऋषि वाल्मिकी को ही लें। वह पहले डाकू थे। सप्तऋषि के वचनों से प्रभावित होकर वह तपस्वी बन गए और बाद में उन्होंने रामायण की रचना की। उदाहरण देने के लिए इतिहास का सहारा न भी लें, अपने आस–पास ही देखें तो पाएंगे कि जिसने सत्संग किया वह तर गया। गंदे नाले का पानी गंगा नदी में गिरता है तो उसका अपना अस्तित्व मिट जाता है अर्थात वह भी गंगाजल हो जाता है।

हमें सदैव समाज के उन्नत, बुद्धिमान एवं सज्जन व्यक्तियों की संगति में समय बिताना चाहिए। इससे हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है। विचारों को सही दिशा मिलती है। आत्मा का भोजन सत्संगति है। सत्संगति के प्रभाव से ही हम सुखद, संतुष्ट और शांत जीवन बिताने में समर्थ होंगे।

सतसंगति हमें सही रास्ते पर ले जाता है। जरूरत पड़ने पर सही परामर्श देता है, सदैव सत्कर्मों की प्रेरणा देता है। सत्संगति वह पतवार है जो हमारे जो हमारे जीवन की नाव को भँवर और तूफान में फंसने नहीं देती। हमें किनारे तक पहुंचाने में सहायक होती है। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम सज्जनों की संगति करें और दुर्जनों से दूर रहें।

सबने देखा है

राजेश शर्मा, सहायक

किसने देखा है क्या देखा है
हमनें देखा है नहीं, पर सबने देखा है
मेरी वफा का असर देखना है
तो हमनशीनों की आंखों में देखो
वो क्यों रात भर सोए नहीं
कहीं न कहीं उनकी आंखों में
उन जगी रातों को सबने देखा है
बेवफा कह के जिसने हमें दगा दिया
वफा निभाने की बात सबसे करते रहे
चेहरे पर मेरे शिकन की दरकार में
माथे पे पसीना जिनके सबने देखा है

नामुमकिन सी इक कोशिश उन्होंने की तो है
हाल ए दिल सबसे छुपाने की
उस बेबाक हंसी में छुपी
उस गम की हल्की सी लकीर को सबने देखा है
रहबरी, रहनुमाई बस लफ्जों में रह गई
रूस्वाईयां, शिकवे, तकलीफें, मुसीबतें मेरे हिस्से आई
कुछ तो बात बाकि है अभी भी मुझमें
मेरी बात का जिक्र आते ही नजरों को उनकी
झुकते सबने देखा है

यूं तो लाखों की भीड़ है सब ओर
हर कोई चाहता है नजर–ए– इनायत उनकी
फिर भी तन्हाइयों में सोच के हमें
उस रूआन्सी से चेहरे को सबने देखा है
कुछ तो देखा होगा किसी न किसी ने
कुछ तो ऐसा कहा होगा
जो दीवार के उस पार तलक सुनाई दिया है
यूं ही बिना बात ख्वामखाह
बात को इतनी दूर आते सबने देखा है

लाज्मी है हर सबक
चढ़ने के लिए सीढ़ियां कामयाबी की
पहुंचने के लिए उस मंजिल पर जिसका अरमान हो
जंग–ए–मैदान में बड़े शहसवारों को
मुंह के बल गिरते सबने देखा है
ततबीर कोई नेक करनी चाहिए
बेमुनासिब को मुनासिब करने की कोशिश करते रहना
मुनासिब जो रहा जमाने भर से
गिरते तख्त–ओ–ताज, तकदीर को सबने देखा है

टोपी – हिमाचल की पहचान

चन्द्र शेखर
अधीक्षक

पहाड़ी टोपी हिमाचल के लोगों की पहचान है। हिमाचली टोपी देशभर में अलग पहचान रखती है। हिमाचली टोपियों का इस्तेमाल विभिन्न रंगों में किया जाता है। इसमें हरा और लाल रंग विशेष है जो हिमाचल के गर्व से भी जुड़ा है क्योंकि इसका प्रयोग मेहमानों के सम्मान में तथा विवाह एवं अन्य उत्सवों के दौरान किया जाता है।

पहाड़ी क्षेत्र में शादी समारोह में बारातियों को टोपी पहनाई जाती है। इसके साथ टोपी पर एक जंगली फूल भी लगाया जाता है जिसे किन्नोरी भाषा में चमकाऊ भी कहते हैं। इस फूल को लगाने से टोपी की शान बढ़ जाती है।

पहाड़ी टोपियां पशमीना या ऊनी पट्टी और रंगीन तथा लाल मखमल से तैयार की जाती हैं। हिमाचल में इन टोपियों का अपना ही महत्व है। ठंड से बचने के लिए इन टोपियों का प्रयोग किया जाता है साथ ही इसमें हिमाचल की परंपरा भी झलकती है। हालांकि हिमाचल की टोपियां राजनीति में इसके प्रयोग को लेकर भी मशहूर है।

हिमाचली टोपियां तीन प्रकार की होती हैं–

1. **कुल्लवी टोपी (कुल्लू)**
2. **बुशहरी टोपी (रामपुर, बुशहर)**
3. **किन्नोरी टोपी (किन्नोर)**

हिमाचली टोपी की मांग में वृद्धि के साथ ही ये विभिन्न ई–कामर्स वेबसाइट पर भी उपलब्ध है। हिमाचल घूमने आने वाले पर्यटक यहां से जाते समय अपने साथ हिमाचल की टोपियां ले जाना नहीं भूलते।

अद्भुत तथ्य

रमन कटोच, एम.टी.एस

- लड़कियां लड़को से दुगुना आंखे झपकाती है।
- दाएं हाथ वाले लोग बाएं हाथ वाले लोगों से तकरीबन 9 साल ज्यादा जीते हैं।
- आंखे खुली रखकर छींकना असंभव है।
- शरीर की सबसे मजबूत मांसपेशी जीभ है।
- घोंघा 3 साल के लिए सो सकता है।
- पोलर भालू बाएं हाथ के जीव होते हैं।
- तिलचट्टा बिना के सिर के 9 दिन तक जी सकता है इससे पहले कि वह भूख से न मरे।
- शुतुरमुर्ग का अंडा उसके दिमाग से बड़ा होता है।
- चीटियां कभी नहीं सोती है।
- इंसान का दिमाग 80 प्रतिशत पानी होता है।
- जन्म के समय एक पांडा चूहे से भी छोटे आकार का होता है।
- लीच के 32 दिमाग होते हैं।
- शेर दिन में 20 घंटे सो सकता है।

कुमार रविशंकर
वरिष्ठ अनुवादक

अनुवाद करता हूं

अनुवादक हूं अनुवाद करता हूं
शब्दों को, भावों को, अर्थों को, लिपियों को,
लक्ष्य भाषा में संप्रेषण का अभ्यास करता हूं
अनुवादक हूं, अनुवाद करता हूं।

लोग इसे दोयम दर्जे का काम कहते हैं
ठीक ही कहते हैं, जो पहले कहा जा चुका होता है।
फिर से वही बात कहता हूं
अनुवादक हूं, अनुवाद करता हूं।

ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य समतुल्य करते
अर्थ, शैली, प्रभाव को संजोकर,
शब्दों से सांस्कृतिक आत्मसात करता हूं
अनुवादक हूं, अनुवाद करता हूं।

अनुदित पत्र, परिपत्र, सूचना, विज्ञापन, निविदा आदि
अनुवादक की तरह ही गौण रह जाते हैं,
आंकड़ों के लिए हिसाब रखता हूं
अनुवादक हूं, अनुवाद करता हूं।

भाषाओं के समुद्र में सेतु है अनुवाद
विश्वग्राम की धारणा को फलित करता है अनुवाद,
अब तो मशीन और तकनीक का भी प्रयोग करता हूं
अनुवादक हूं, अनुवाद करता हूं।

कालाअंब अस्पताल की आधारशिला

प्रधानमंत्री श्रमयोगी मानधन योजना का शुभारंभ

अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में जीना जीवन का हिस्सा माना जाता है परंतु सभी प्रकार की परिस्थितियों में सदैव मुस्कुराते रहना जीने की कला है ।

शुभ दीपावली

महिला दिवस-2020

ध्वजारोहण

योग दिवस-2020

जाने क्या गजब हुजूर कर दिया...

राजेश शर्मा, सहायक

जाने क्या गजब हुजूर कर दिया है
जाने क्या गजब हुजूर कर दिया है
मैनें अपने सभी खैरख्वाहों को खुद से ही दूर कर दिया है
जाने क्या गजब हुजूर कर दिया है
रकीबों को कहते सुना है मैंनें के अब न मयस्सर होंगी यारियां तुम्हें
दुश्मनों की फेहरिस्त में अव्वल कहा जा रहा हूं
बिन मकसद मुझे इतना मशहूर कर दिया है
जाने क्या गजब हुजूर कर दिया है...

महकदें में परवान चढ़ती थी वो अरमानों की इबतिदा
मैहनशिनों की ख्वाहिशों की सरगोशियां
के आज तो मैहखाना भी मुझसे मुंह फेर बैठा है
और मैं आस लगाए हूं इक नजर की
क्या हो गया ये किस कदर मुझे इतना मजबूर कर दिया है
जाने क्या गजब हुजूर कर दिया है...

कभी वो दम भरते थे जो हमारी शख्सियत का
आज मुंह फेर के निकल जाते हैं गलियों में अजनबी की तरह
जैसे कर रहे हों ना वासता रखना है मुझसे कोई अब
यही मेरे बाबस्तां अब मंजूर कर दिया है
जाने क्या गजब हुजूर कर दिया है...

रजा तेरी है मेरे मालिक कब हवा उड़े कब पत्ता हिले
जिंदगी के रंगमंच पर सब अपना किरदार अदा कर रहे हैं
कब अर्श मिले कब धूल
कब तालियों की गूंज कब फूल
कब वाहवाही मिले कब परदा गिरे
अब सब तेरे नजरे नूर कर दिया है
जाने क्या गजब हुजूर कर दिया है...

तेरी रूस्वाईयों का बोझ दिन ब दिन कुछ ज्यादा हो चला है
पर मेरे बर्दाशत की हद अभी बाकि है
तू न सही कोई और भी न हो
फर्क कुछ ज्यादा पड़ता नहीं
हर आशिक यही कहे चिल्ला के वफा मिले हर बेवफा को
यही आशिकी का नया दस्तूर कर दिया है
जाने क्या गजब हुजूर कर दिया है...

आंसू और डर हमारे विश्वास और योग्यता को खत्म करता है । अतः यदि हम कुछ खोते हैं
तो उस नुकसान पर रोने की जरूरत नहीं है बल्कि योजना बनाएं, कार्रवाई करें, जोखिम उठाएं और जीत के अवसर पैदा करें ।

चामुण्डा मंदिर (चंबा) हिमाचल प्रदेश

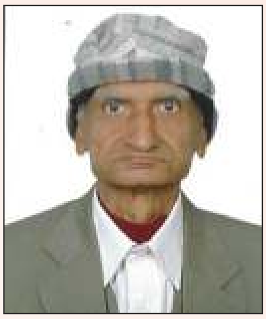

सुभाष चंद्र गुप्ता, उप निदेशक (सेवा निवृत)

हिमाचल प्रदेश को देवभूमि के रूप में जाना जाता है। यहां देवी देवताओं के लाखों मंदिर है। नगर कोटवाली, ज्वाला जी और चिन्नपूर्णा आदि प्रमुख मंदिर है। चम्बा एक कसवाई (कस्बे जैसा) शहर है। चम्बा समुद्र तल से 926 मीटर की उंचाई पर स्थित है। यह तीन ओर से धौलाधार, पीर पंजाल और लस्कर नामक पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है। रानी नदी जिसका पुराना नाम इरावती था इस क्षेत्र का मुख्य आकर्षण है। चम्बा की मां चामुंडा का मंदिर एक दूसरा आकर्षण है। चंबा की मां चामुंडा का मंदिर भिति चिन्ह व काष्टकला का अदभुत नमूना है, यह चम्बा के बाकी मन्दिरों से काफी अलग है। यह पैगोडा शैली में बना हुआ है। भारत सरकार के पुरात्तव विभाग ने इसे राष्ट्रीय महत्व का सुरक्षित स्मारक घोषित किया है। ऐसा कहा जाता है कि राजा शालिवर्मन द्वारा चंबा नगर बसाने से पहले यह मंदिर यहां मौजूद था पर आपदा में मंदिर के ध्वस्त हो जाने पर इसका दुबारा निर्माण हुआ। पैगोडा शैली के इस मंदिर का गर्भगृह ऊंचे चबूतरे पर बनाया गया है। इसका मंडप खुला हुआ है। इसके निर्माण में स्लेटी पत्थरों का इस्तेमाल किया गया है। छतों के किनारों में काष्ठ निर्मित चार नक्काशीदार श्रंखलाएं देखी जा सकती है। मंडप की छत नौ हिस्सों में बंटी है जिसपर काष्ट फलक और चार सुंदर प्रतिमाएं अंकित की गई हैं। मंदिर की पूरी छत मूर्ति शिल्प से सुसज्जित है। जिस पर देवी देवताओं, गंर्धवों और ऋषियों के चित्र अंकित किए गए हैं। कई जगह पशु–पक्षियों के भी चित्र अंकित किए गए हैं। स्तंभ शीर्ष पर योगासन करती मानव आकृतियां बनी है। गर्भ–गृह के प्रवेश द्वार पर विशाल पीतल की घंटियां लगी है। यहां पर एक अभिलेख भी है इस पर लिखा गया है कि पंडित विद्याधर ने 02 अप्रैल 1762 में 27 सेर वजनी और 27 रूपए मूल्य के इस घंटी को दान में दिया था। चामुंडा मंदिर में वैशाख मास में मेला लगता है। इस समय चंडीमाता अपनी बहन चामुंडा माता से मिलने आती है। इस दौरान विशाल मेला लगता है। उस समय श्रद्धालुओं का ताना लग जाता है। चामुंडा का मंदिर उंचाई पर स्थित है इसलिए चामुंडा मंदिर से चंबा शहर का पूरा नजारा दिखाई देता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे पूरा शहर मां चामुंडा के चरणों में स्थित है। मंदिर प्रांगण से रानी नदी और सड़कों का भी सुंदर नजारा दिखाई देता है। मंदिर में रोज शाम को आरती होती है। आरती के बाद अगर आप यहां से चंबा शहर का नजारा करें तो तो एक विशेष आनंद आता है। मंदिर पहुंचने के दो रास्ते हैं एक सड़क मार्ग से और दूसरा सीढ़ियों से। सीढ़ियां चढ़कर चंबा के मुख्य बाजार से चामुंडा मंदिर तक पहुंचा जा सकता है। अगर सड़क मार्ग से मंदिर पहुंचना है तो झुमार जाने वाले मार्ग पर कोई दो किलोमीटर चलने के बाद मंदिर पहुंचा जा सकता है। रेल मार्ग से पठानकोट नजदीकी स्टेशन है। यहां से बस या टैक्सी से चंबा पहुंचा जा सकता है। हवाई मार्ग से चंबा से नजदीकी हवाईअड्डा गग्गल हवाई अड्डा है। यहां से बस और टैक्सी से चंबा पहुंचा जा सकता है।

वीरता आत्मविश्वास है व परिवार स्त्रोत

जीत एक सिलसिला है। जो लोग यह मानते हैं कि एक बार जीत गए अब आगे कुछ नहीं करना है तो मानो जीत कर हार की तैयारी कर रही है। अब तो जीत और हार को वीरता से जोड़कर देखने का समय है। ऐसा बिल्कुल नहीं है कि जो जीतेगा वही वीर होगा और ऐसा भी नहीं है कि जो वीर है वह जीत ही जाए। हार–जीत के बड़े गहरे मायने होते हैं। कई बार हम जीतकर भी हार जाते हैं और कई बार हारने के बाद भी जीत जाते हैं।

एक मशहूर घटना है– हनुमान के लंका जलाने की और इसे सभी लोग जानते भी हैं। धार्मिक लोग हनुमान जी के पराक्रम को श्रीराम जी की कृपा मानते हैं और अन्य एक अदभुत आत्मविश्वास से भरा कार्य, क्योंकि रावण की लंका वहीं जाकर जलाना निराला काम था। यदि ध्यान से देखें तो रावण के आदेश पर राक्षसों ने हनुमान जी की पूंछ में आग लगाई तो एक बार तो लगा हनुमान जी हार गए। फिर कुछ देर के बाद जब हनुमान जी ने पराक्रम दिखाया तो वह हार जीत में बदल गई। हमारे साथ कई बार ऐसा होता है कि आरंभ में पराजय की स्थिति हो परंतु यदि थोड़ी सावधानी बरतें तो जीत खींचकर लाई जा सकती है। और ऐसा भी होता है कि पहले तो लग रहा होता है कि हम जीत गए और थोड़ी सी लापरवाही से हार आने में में देर नहीं लगती। इसलिए मुद्दा जीत–हार का नहीं है।

असल बात है वीरता को बचाए रखना। वीरता के लिए महत्वपूर्ण है कि इसका स्त्रोत क्या है? वीरता आत्मविश्वास है और असके आने के तीन प्रमुख स्त्रोत हैं – संसार, परिवार और परमशांति। इसलिए जीत कभी खत्म न होने वाला एक सिलसिला है जिसके लिए स्त्रोत जहां से भी मिले मोटीवेशन लेते रहना चाहिए।

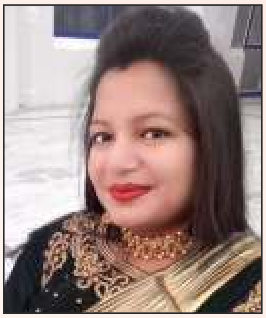

चीना गुप्ता
सहायक

वृक्षों का वास रहने दें

वन में वृक्षों का वास रहने दें
झील झरनों में सांस रहने दें।
वृक्ष होते हैं वस्त्र जंगल के
छीन मत घोंसला है ये चिड़ियों का
तोड़ मत ये निवास रहने दे।
पोड़–पौधे चिराग हैं वन के
वन में बांकि उजास रहने दें
वन विलक्षण विद्या है कुदरत की
इस अमानत को खास रहने दें।

बुराई से अच्छाई की ओर

असत्य का कर त्याग सत्य का अपनाओ मार्ग
लेना ही लेना छोड़ो देने से नाता जोड़ो
आलस्य से रहो दूर परिश्रम करो तुम जमकर
द्वेषभाव तुम दूर करो मैत्री तुम प्रारंभ करो
दोष मत लगाओ क्षमा भाव अपनाओ
गंदगी को दूर भगाओ स्वच्छता से खुशियां लाओ
क्रोध से करो इंकार हर ओर तुम बांटो प्यार
भ्रष्टाचार का करो अंत ईमानदारी का जपो मंत्र
भेदभाव है बड़ी बुराई समानता में सबकी भलाई

विश्व महाशक्ति–भारत

दुखमोचन गोपाल, शाखा अधीक्षक

किसी भी राष्ट्र की समृद्धि उसके निवासियों की कार्यकुशलता, संसाधनों की उपलब्धता एवं सांस्कृतिक विरासत पर निर्भर करता है। समाज में शिक्षित लोगों के कार्यकलापों से ही उसके विकास की दशा एवं दिशा तय होती है। हमारा देश भारतवर्ष भी सदियों से विश्वगुरू रहा है। प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों एवं कुशल युवाशक्ति के बल पर आज भी महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में तो विश्व के तमाम देश भारतीय ज्ञान और कौशल का लोहा मान चुके हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के दूर दृष्टि और कुशल नेतृत्व में भारत विश्वपटल पर हर क्षेत्र में लगातार सफलता का झंडा फहरा रहा है। ऐसे में हर भारतीय नागरिक का दायित्व है कि देश के विकास की निर्बाध यात्रा में हर प्रकार से सहयोग करें ताकि 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का जन–जन का सपना साकार हो सके एवं सनातन युगों से चली आ रही गौरवशाली परंपरा कायम रह सके।

जाहू – संगम शहर

राकेश कुमार, उच्च श्रेणी लिपिक

जाहू हिमाचल प्रदेश का एकमात्र ऐसा नगर है जो हिमाचल प्रदेश के बिल्कुल मध्य में स्थित है। यह पूरे हिमाचल का मध्य बिंदु है जो कि जिला हमीरपुर में स्थित है। यह नगर तीन जिलों–मंडी, बिलासपुर तथा हमीरपुर की सीमाओं को छूता है। यह नगर पहाड़ियों के बीच में बसा है। यहां पर हर वर्ष नालवाड का मेला अप्रैल माह में लगता है जिसमें किसान जगह–जगह से आकर अपने बैलों को खरीदते और बेचते हैं। बैलों को किसानों द्वारा पहाड़ों में खेती के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसके अलावा यहां पर संतोषी माता का मंदिर भी स्थित है जिससे इस शहर का महत्व और शोभा और अधिक बढ़ जाता है। यह नगर रिवालसर से 23 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। जो कि बोद्ध धर्म का बहुत ही पवित्र स्थल है।

जाहू नगर में तीन नदियां (सुनहैल, चंथ तथा सीर) मिलती है जो कि आगे जाकर गोविंद सागर झील में मिलती है जिससे भाखड़ा बांध पर बिजली उत्पन्न की जाती है। इन नदियों में महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ, रेत तथा बजरी पाए जाते है जो कि नगर के आस–पास बन रहे घरों को बनाने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं।

स्वास्थ्य

नरैण सिंह
उच्च श्रेणी लिपिक

स्वस्थ रहें हम सब, स्वच्छ रहें हम सब,
स्वास्थ्य का रखें पहले ध्यान, बाद में ही करें कोई अन्य काम।

व्यायाम से स्वास्थ्य सुधरे, शरीर का ओज निखरे,
अच्छे स्वास्थ्य से ही जीवन, बीमारी से सब कुछ दुर्गम।

कर्म है हर मनुष्य का कर्तव्य, स्वस्थ हो तभी प्राप्त होगा लक्ष्य,
स्वस्थ रहे शरीर तो संभव है हर काम, स्वास्थ्य यदि साथ हो तो तय करे हर मुकाम।

योग प्राणायाम और ध्यान करे, रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़े,
रोग का कारण अनियमित जीवन, जागरूक हों और लाएं संतुलन।

प्रतिदिन 20 मिनट योग करें, रोग–दोष को दूर करें,
स्वच्छता से स्वास्थ्य बनें, स्वास्थ्य से जीवन बनें।

वर्तमान में हर रोग का निदान विविध चिकित्सा उपचार है प्रधान,
रोग जो न हो शरीर में आपके, यदि यही सोच हो तो बने महान।

आधुनिक चिकित्सा करे रोग का उपचार,
निरोगी रहो न लाओ ऐसी स्थिति बार–बार।

हम अपने जीवन में उंचाई अपनी अभिवृति से नहीं बल्कि अपनी मनोवृति से हासिल करते हैं ।

नजरिया-जीवन जीने का

मनोज तंवर, उच्च श्रेणी लिपिक

एक व्यक्ति का घर शहर से दूर एक छोटे से गाँव में था। उसके घर में किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं थी। लेकिन फिर भी वो खुश नहीं रहता था। उसे लगता था कि शहर की जिंदगी अच्छी है। इसलिए एक दिन उसने गाँव के घर को बेचकर शहर में घर खरीदने का फैसला किया। अगले ही दिन उसने शहर से अपने दोस्त को बुलाया। जो रियल इस्टेट में काम करता था।

उसने अपने दोस्त से कहा– तुम मेरा ये गांव का घर बिकवा दो और मुझे शहर में एक अच्छा सा घर दिलवा दो। उसके दोस्त ने घर को देखा और कहा– तुम्हारा घर इतना सुन्दर है। तुम इसे क्यों बेचना चाहते हो। अगर तुम्हे पैसों की जरूरत है तो मैं तुम्हें कुछ पैसे दे सकता हूं। उस व्यक्ति ने कहा–नहीं नहीं मुझे पैसों की जरूरत नहीं है। मैं घर इसलिए बेचना चाहता हूं क्योंकि ये घर गांव से बहुत दूर है। यहां पर शहर की तरह पक्की सडकें भी नहीं है। यहां के रास्ते भी बहुत ऊबड़–खाबड़ है। यहां पर बहुत सारे पेड़ पौधे है। जब हवा चलती है तो पूरे घर में पत्ते फैल जाते हैं। ये गांव पहाड़ों से घिरा हुआ है। अब तुम ही बताओ मैं शहर क्यों न जाऊं।

उसके दोस्त ने कहा–ठीक है। अगर तूने शहर जाने का सोच ही लिया है तो मैं तुम्हारे इस घर को बिकवा दूँगा। अगले ही दिन सुबह के समय वह व्यक्ति अखबार पढ़ रहा था। उसने अखबार में एक घर का विज्ञापन देखा। विज्ञापन में लिखा था।

शहर की भीड़–भाड़ से दूर, पहाड़ियों से घिरा हुआ, हरियाली से भरा हुआ, ताजी हवा युक्त एक सुंदर घर में बसायें अपने सपनों का घर। उसने उस घर को खरीदने का मन बनाया। उसने उस नंबर पर फोन किया तो वह हैरान रह गया। क्योंकि विज्ञापन उसी के घर का था। यह जानकर वो खुशी से झूम उठा। उसने अपने दोस्त को फोन लगाया और कहा–मैं तो पहले से ही अपने पसंद के घर में रह रहा हूँ। इसलिए तुम मेरा घर किसी को मत बेचना। मैं यहीं रहूंगा।

दोस्तो, अधिकतर लोगों को अपने जीवन से शिकायत होती है। वे सोचते हैं कि उनके जीवन में दुःख ही दुःख भरे पड़े हैं।

ऐसे लोगों को दूसरे लोगों की जिंदगी बहुत ही अच्छी लगती है। लेकिन आप ऐसा कभी मत करना। कुछ भी करने से पहले एक बार अपनी जिंदगी को दोस्तों की नजरों से जरूर देखना। अगर आपने कभी भी जिंदगी को दूसरों की नजरों से देखा तो आप पाएंगे कि आपकी जिंदगी दूसरों से बहुत ही अच्छी है।

मंजिल तक कैसे पहुंचे ?

आयुषी ठाकुर, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

जब आपको जीवन में कुछ भी सही नहीं लगता और कोई भी आप पर भरोसा नहीं करता तो क्या करना चाहिए ?

कभी–कभी आप उन रास्तों को नहीं चुन पाते हैं जिन्हें आप वास्तव में चुनना चाहते हैं। कभी–कभी कोई भी आप पर भरोसा नहीं करता है क्योंकि आप कई बार असफल हुए हैं। ऐसे समय में सबसे अच्छी बात होगी कि आप स्वयं पर विश्वास करें और अपना काम करते रहें। जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए स्वयं पर विश्वास करना जरूरी होता है।

लोगों को यह पता होता है कि कब किसी को अपने पक्ष में प्रभावित करना है खासकर तब जब वह उसकी कमजोरियों को जानता है। विश्वास किजिए यह सच्चाई है। कुछ लोग आपका शुभचिंतक होने का दावा करते हैं परंतु जब कभी आप उन्हें प्रोत्साहित करने का प्रयास करते करते हैं वे आपको नकारात्मकता में ले जाने के 101 बहाने बताने लगते हैं।

कभी भी किसी दूसरे को अपने जीवन में सकारात्मकता ढूंढ़ने कि लिए न कहें क्योंकि उन्हें इस बात की परवाह नहीं और न ही इससे उन्हें कोई फर्क पड़ता है। सकारात्मक सोच और प्रेम को पाने की सबसे अच्छी जगह आप स्वयं हो। आप स्वयं से यह पूछें कि मैं इससे क्यों जूझ रहा हूं? क्या मैं अपने जीवन में वास्तव में यही चाहता हूं। मैं क्यों सफल न हो सका।

कई बार इन प्रश्नों के जबाब आपके पास होते हैं। पर कभी–कभी आप उलझे हुए महसूस करते हैं और आपको इन प्रश्नों का जवाब नहीं मिलता है। परंतु किसी भी स्थिति में आपको रूकना नहीं है और आगे बढ़ते रहना है। समय के साथ सभी प्रश्नों के जवाब मिल जाते हैं और समस्याओं का हल होने लगता है।

और सबसे महत्वपूर्ण बात – कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं है इसलिए मेहनत करते रहें और अपने सपनों के पीछे भागते रहें। आपको मंजिल तक पहुंचने से कोई नहीं रोक सकता है क्योंकि आप अपनी मंजिल को पहचानते हैं।

आपने अपने जीवन में बहुत देर से क्या सीखा?

1. डरें नहीं। आप जिस चीज को दिल से पाना चाहते हैं, उसके लिए निरंतर प्रयास करते रहें।
2. जिंदगी में उन्हीं रास्तों का चयन करें जिसके लिए आपको कभी पछतावा महसूस न हो।
3. अपने जीवन में हर एक पल का आनंद लें क्योंकि कोई दिन चाहे कितना ही खराब क्यों न हों आप इन्हीं दिनों को अपने 'अच्छे पुराने दिन' कह कर याद करेंगे।

जिंदगी में ऐसी क्या चीजें हैं जिन्हें बेकार नहीं समझना चाहिए ?

1. **माता–पिता** – हम आज जो भी हैं वो उन्हीं के वजह से हैं। अपनी पूरी जिंदगी हमारे माता–पिता हमारे भविष्य के लिए संघर्ष करते रहते हैं।
2. **विकल्प**– हमारे चुने गए विकल्प हमारी जिंदगी को परिभाषित करते हैं। इसे बुद्धिमानी से चुनें क्योंकि हम अपने जिंदगी के विकल्प चुनने के लिए स्वतंत्र हैं परंतु इनके परिणामों से हम मुक्त नहीं हो सकते। गलत विकल्प चुनने पर हमें जिंदगी भर पछताना पड़ सकता है।
3. **स्वास्थ्य**– हमेशा अपनी सेहत का ख्याल रखें क्योंकि अच्छा स्वास्थ्य ही सुखी जीवन का आधार होता है। स्वास्थ्य संबंधी समस्या के साथ हमें मन की शांति महसूस नहीं हो सकती है।
4. **समय**– समय को कभी भी व्यर्थ न जाने दें क्योंकि समय आपको संवार भी सकता है और बिगाड़ भी सकता है।

सुश्री आयुषी ठाकुर कोअरा एक अमेरिकन प्रश्न–उत्तर वेबसाइट पर अपने विचार नियमित रूप से रखती हैं। अटल बिहारी वाजपेयी राजकीय इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी संस्थान से बी–टेक की शिक्षा ली हुई आयुषी को कोअरा पर हजारों लोग पढ़ते हैं।

बारिश का मौसम

आज बाहर निकले घर से
देखा बारिश हो रही थी
नन्हीं नन्हीं फव्वारें पानी के चेहरे को छू रही थी।

कितना शुकुन होता है इन फव्वारों में
ऐसा लगता है जैसे नवीन जीवन मिला हो किसी को
मिलता ही है नया जीवन
बेजान पड़े पेड़ पौधों को
प्यासे जीव जंतुओं को
जो इतनी बेसब्री से इंतजार करते हैं इस बारिश का।

असली खुशी तो केवल उनको ही होती है
क्योंकि हम इंसान क्या जाने इस खुशी को
हमें तो अपने रोने धोने से ही फुर्सत कहां मिलती है
हम क्या समझें प्रकृति के इस प्यार को।

प्रकृति ने हमें इतना कुछ दिया है
परंतु हम फिर भी कभी उसकी कद्र क्यों नहीं करते हैं
बल्कि उसका नाश करने में लगे हैं
और फिर शिकायत करते हैं कि ये गर्मी इतनी
क्यों बढ़ गई, ये बारिश क्यों नहीं हो रही।

अरे भले मानुषों ये तुम लोगों की ही देन है
अब क्यों शिकायत करते हो
अब भी वक्त है जागो, जाग जाओ
अपनी इस लालसा भरी नींद से
और जगाओ प्रकृति को फिर से
तभी जी पाओगे अपना बांकि जीवन
नहीं तो रह जाओगे शिकायत करते।

आशा मेहता, सहायक

कौन रोक पाएगा मुझे

कौन रोक पाएगा मुझे
न ज्ञानी, न अज्ञानी
न ये समाज
क्योंकि मैं हूं हवा
तुम तक पहुंच ही जाउंगी
बालों को तुम्हारे
बेरोकटोक सहला ही दूंगी
कौन रोक पाएगा मुझे

न दिल न दिमाग
न धड़कन
क्योंकि मैं हूं एहसास
तुम तक पहुंच ही जाउंगी
हृदय को तुम्हारे
प्यार से भर ही दूंगी
कौन रोक पाएगा मुझे

न सलाखें, न दर
न दीवार
क्योंकि मैं हूं स्वर
तुम तक पहुंच ही जाउंगी
बस तुम याद रखना
दीवारों के भी कान होते हैं ।

विदेशी अभिव्यक्तियां

—राजभाषा शाखा

अंग्रेजी भाषा में विदेशी भाषा की अभिव्यक्तियों का प्रयोग अक्सर देखने को मिलता है । ऐसा प्रयोग विशेषकर लिखने में मिलता है, पर कभी दृ कभी इसका प्रयोग बोलचाल की अंग्रेजी में भी होता है । अंग्रेजी में बहुधा प्रयुक्त लेटिन, फ्रेंच एवं अन्य 100 विदेशी अभिव्यक्तियां एवं उसका हिंदी अनुवाद–

1-	Ab initio (L)	आरंभ से	from the beginning
2-	Above par (L)	अधिमूल्य पर	above average
3-	Ad hoc (L)	उस विशेष उद्देश्य के लिए, तदर्थ	for that special aim
4-	Ad infinitum (L)	अनंत तक	up to infinity
5-	Ad valorem (L)	मूल्य के अनुसार	according to value
6-	Aide memoire (Fr)	स्मारक ग्रंथ	an aid to memory
7-	A* la carte (Fr)	किराए के बिल्टी के अनुसार	according to the fare bill
8-	A* la mode (Fr)	प्रचलित रीति के अनुसार	according to fashion
9-	Apologia (Gr)	क्षमा प्रार्थना का लेख	an apologetic writing
10-	A posteriori (L)	परिणाम से कारण तक	from effect to cause
11-	A priori (L)	कारण से परिणाम तक	from cause to effect
12-	At par (L)	सममूल्य पर	at the same rate
13-	Belle amie (Fr)	सहेली , महिला मित्र	a female friend
14-	Bonhomie (Fr)	अच्छी प्रकृति	good nature
15-	Bon ton (Fr)	सज–धज की पराकाष्ठा	the height of fashion
16-	Bonafide (L)	वास्तविक, सच्चा	genuine;real
17-	Bourgeois (Fr)	व्यापारी, सर्वहारा, बुर्जुवा	a trader
18-	Chef de cuisine (Fr)	प्रधान रसोईदार	a head cook
19-	Circa (L)	लगभग	around; approximately
20-	Coiffour (Fr)	बाल सॅवारनेवाला	a hair dresser
21-	De facto (L)	वस्तुतः / सचमुच / यथार्थ में	really ; actual ; infact
22-	De jure (L)	विधितः	by right ; by law
23-	Double entete (Fr)	दोहरा अर्थ	double meaning
24-	Elite (Fr)	उत्तम अंश	the choice part
25-	En masse (Fr)	सामूहिक रूप से	in a body
26-	En route (Fr)	मार्ग में	on the way
27-	Entente (Fr)	बुद्धि	understantanding
28-	Entrepreneur (Fr)	उद्यमी / व्यवसायी	businessman
29-	Epouse (Fr)	पत्नी	wife

30-	Erattum (L)	गलती	error ; mistake
31-	Ergo (L)	इसलिए	therefore
32-	Et cetera (L)	आदि / इत्यादि	and the rest ; and so on ; and more
33-	Eureka (Gr)	मुझे मिल गया	I have found it
34-	Excelsior (L)	उत्तम	higher
35-	Ex curia (L)	अदालत के बाहर	out of court
36-	Ex officio (L)	पदेन यपदाधिकारेण	by virtue of his office
37-	Ex parte (L)	एक तरफा	from one side only
38-	Ex post facto (L)	पूर्व प्रभाव से	from the early date
39-	Fait accompli (Fr)	पहले से किया हुआ काम	a thing already done
40-	Grand merci (Fr)	बहुत धन्यवाद	many thanks
41-	Ibidem (L)	उसी स्थान में	in the same place
42-	Idem (L)	वही य यथोक्त	the same
43-	Impasse (Fr)	न सुलझने वाली कठिनाई	an insoluble difficulty
44-	Impromptu (L)	बिना अध्ययन के	without study
45-	In camera (L)	कमरे के भीतर गुप्त स्थान में	in a private room
46-	In curia (L)	न्यायालय में	in court
47-	Infra dignitatem (L)	मर्यादा के विरूद्ध	below one's dignity
48-	In propria persona (L)	प्रत्यक्ष रूप में स्वयं	in person
49-	In situ (L)	अपने नियत स्थान में	in its original place
50-	Inter alia (L)	दूसरी वस्तुओं के बीच में	among other thing
51-	Inter se (L)	परस्पर	amongst themselves
52-	In toto (L)	पूर्ण रूप से	in the whole ; entirely
53-	Ipso facto (L)	वास्तविक रूप से	really
54-	Locus standi (L)	खड़ा होने का स्थान हस्तक्षेप करने का अधिकार	place for standing right of interfering
55-	Magnum opus (L)	बड़ा कार्य	a great work
56-	Memorabilia (L)	स्मरण रखने योग्य वस्तुएं या बातें	things worth remembering
57-	Modus operandi (L)	काम करने का ढ़ंग	mode of operating
58-	Monsieur (F)	महाशय	Sir
59-	Mutatis mutandis (L)	आवश्यक परिवर्तन सहित	with necessary changes
60-	Obiter dictum (L)	आक्षेप	something said by the way
61-	Presto (I)	शीघ्रता से	quickly
62-	Per capita (L)	प्रति व्यक्ति	for each person
63-	Per se (L)	स्वयंय स्वभावत:	by itself ; intrinsically

64-	Persona non grata (L)	अस्वीकार्य व्यक्ति	unacceptable or wnwelcome person
65-	Post mortem (L)	मृत्यु के उपरांत शरीर परीक्षण	examination of a body after death ; autopsy
66-	Prima facie (L)	प्रथम दृष्टया	on the first view
67-	Pro forma (L)	रीति के अनुसार	according to the form
68-	Pro rata (L)	समानुपातिक	proportional
69-	Quid pro quo (L)	बदल	favour or advantage given or expected in return for Something ; similar to give and take
70-	Resume (L)	संक्षेप य सार	a summary or abstract
71-	Sine die (L)	अनिश्चित काल के लिए	without a definite date
72-	Sine qua non (L)	अनिवार्य स्थिति ध्शर्त	an indispensable condition ; thing that is absolutely necessary
73-	Status quo (L)	यथापूर्व	existing state of affairs
74-	Sub juidice (L)	विचाराधीन	under consideration
75-	Sub poena (L)	दंड के अंतर्गत	under a penalty
76-	Tete -a-tete (Fr)	गुप्त वार्तालाप	private talk
77-	Verbatim (L)	शब्दशः	in exactly the same words
78-	Versus (L)	विरूद्ध ,बनाम	against
79-	Via (L)	रास्ते से	by way of
80-	Vice versa (L)	उल्टे क्रम में	the order being reversed

कुछ अन्य विदेशी अभिव्यक्तियां

81-	Ab ante	पूर्व से
82-	Ad certum dium	निर्धारित तिथि
83-	Adjourn motion	कार्यस्थगन प्रस्ताव
84-	Cease Fire	युद्ध विराम
85-	Data	आंकड़े
86-	Ex cadre	संवर्गबाह्य
87-	Ex post facto	कार्योतर
88-	Habeous corpus	बंदी प्रत्यक्षीकरण
89-	Ibid	वही , तत्रैव
90-	In cognito	गुप्त रूप से
91-	In lieu	बदले में
92-	In limine	आरंभ में ही
93-	In rem	सर्व संबंधी
94-	Ipso facto	इसी बात से
95-	Ipso jure	विधितः
96-	Nexus	संबंध
97-	Pros and cons	पक्ष – विपक्ष
99-	Suo motto	स्वतः
100-	Quod vide	जो देखिए

स्वागत एवं विदाई समारोह

पुरस्कृत कर्मचारी

हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन वर्ष 2019

क्र.सं.	नाम (सर्व श्री / श्रीमती)	पदनाम	शाखा
1	नवजोत शर्मा	उ.श्रे.लि.	रोकड़ शाखा
2	राजेश कुमार	सहायक	रोकड़ शाखा
3	नवीनचंद्र पंत	एम.टी.एस	हितलाभ शाखा
4	संतोष कुमार	सहायक	हितलाभ शाखा
5	सुकोमल कुमार	उ.श्रे.लि.	हितलाभ शाखा
6	श्रवण कुमार	उ.श्रे.लि.	राजस्व शाखा–2
7	सुमीत कुमार	सहायक	राजस्व शाखा–2
8	नरेश कुमार	उ.श्रे.लि.	राजस्व शाखा–2
9	सूरजभान	सहायक	राजस्व शाखा–2
10	कमील अहमद	उ.श्रे.लि.	राजस्व शाखा–2
11	अजय कुमार	नि.श्रे.लि.	राजस्व शाखा–2
12	ऋषि	अधीक्षक	राजस्व शाखा–2
13	अंबुज कुमार	नि.श्रे.लि.	हितलाभ शाखा
14	संध्या आजाद	सहायक	वित्त एवं लेखा शाखा
15	विजय कुमार	नि.श्रे.लि.	वित्त एवं लेखा शाखा
16	विशाल	उ.श्रे.लि.	वित्त एवं लेखा शाखा
17	फिरोज अहमद	सहायक	वित्त एवं लेखा शाखा
18	दुखमोचन गोपाल	शाखा प्रबंधक	डी.सी.बी.ओ., मंडी
19	अंजना राणा	अधीक्षक	प्रशासन शाखा
20	अरविंद कुमार मंगलम	सहायक	प्रशासन शाखा
21	प्रदीप शर्मा	सहायक	प्रशासन शाखा
22	सतीश कुमार	उ.श्रे.लि.	प्रशासन शाखा
23	अंशुल	सहायक	प्रशासन शाखा
24	मनोज तंवर	उ.श्रे.लि	सामान्य शाखा
25	सन्नी मल्होत्रा	सहायक	सामान्य शाखा
26	राकेश कुमार	उ.श्रे.लि.	सामान्य शाखा
27	गौरव नेगी	उ.श्रे.लि.	सामान्य शाखा
28	आशीष	एम.टी.एस	सामान्य शाखा
29	मनुज ठाकुर	सहायक	राजस्व शाखा–2
30	चाहत गोयल	अधीक्षक	हितलाभ शाखा
31	नीलाक्ष शर्मा	उ.श्रे.लि.	हितलाभ शाखा
32	मनुबाला	उ.श्रे.लि.	आई.टी.शाखा
33	सुमीत चब्बा	उ.श्रे.लि.	समन्वय शाखा
34	राजेश शर्मा	सहायक	समन्वय शाखा

35	शशिरंजन कुमार	सहायक	वसूली शाखा
36	समुंत विश्वकर्मा	नि.श्रे.लि	वसूली शाखा
37	बृज मोहन	अधीक्षक	लेखा परीक्षा शाखा
38	विकास कुमार	सहायक	लेखा परीक्षा शाखा
39	विजय सिंह	उ.श्रे.लि.	चिकित्सा शाखा
40	अनुप कुमार	सहायक	चिकित्सा शाखा
41	विरेंद्र चौहान	उ.श्रे.लि.	विधि शाखा
42	नरैन सिंह	उ.श्रे.लि.	प्रेषण शाखा
43	चंद्रशेखर	अधीक्षक	सामान्य शाखा
44	आशा मेहता	सहायक	राजस्व–1 शाखा
45	सुमीत कुमार	उ.श्रे.लि.	राजस्व–1 शाखा
46	हेमराज राणा	सहायक	राजस्व–1 शाखा
47	कमलाकांत सागर	उ.श्रे.लि.	राजस्व–1 शाखा
48	सुधांशु	उ.श्रे.लि.	राजस्व–1 शाखा
49	हिमांशु कश्यप	उ.श्रे.लि.	राजस्व–1 शाखा
50	रजनी कुमारी	सहायक	राजस्व–1 शाखा
51	ब्रज भूषण	उ.श्रे.लि	चिकित्सा शाखा
52	अरूण कुमार	सहायक	शाखा कार्यालय, बद्दी
53	निशांत बोद्ध	सहायक	शाखा कार्यालय, बद्दी
54	भूर सिंह मीणा	सहायक	शाखा कार्यालय, बद्दी
55	प्रवीण सालवान	सहायक	शाखा कार्यालय, बद्दी

मूल हिंदी टिप्पण आलेखन योजना
वर्ष–2018–19

क्र. सं.	नाम (सर्व श्री / श्रीमती)	शाखा	पुरस्कार	स्वीकृत राशि
1.	सुमीत चब्बा, नि.श्रे,लि	समन्वय	प्रथम	₹ 5000/-
2	विशाल, उ.श्रे.लि	वित्त एवं लेखा	प्रथम	₹ 5000/-
3	मनोज तंवर, उ.श्रे.लि	सामान्य	द्वितीय	₹ 3000/-
4	सुकोमल कुमार, उ.श्रे.लि	हितलाभ	द्वितीय	₹ 3000/-
5	विकास कुमार, उ.श्रे.लि	लेखा परीक्षा	द्वितीय	₹ 3000/-
6	विरेंद्र चौहान, उ.श्रे.लि	विधि	तृतीय	₹ 2000/-
7	विजय कुमार, नि.श्रे.लि.	वित्त एवं लेखा	तृतीय	₹ 2000/-
8	सूजभान, सहायक	राजस्व–2	तृतीय	₹ 2000/-
9	सुमीत कुमार, सहायक	राजस्व–2	तृतीय	₹ 2000/-
10	संतोष कुमार, सहायक	हितलाभ	तृतीय	₹ 2000/-

राजभाषा पखवाड़ा-2019

1) हिंदी निबंध प्रतियोगिता: 04.09.2019			
हिंदी भाषी			
हिमांशु कश्यप (172691)	प्रथम पुरस्कार	1800/-	
मनोज तंवर (119104)	द्वितीय पुरस्कार	1500/-	
राकेश कुमार (172159)	तृतीय पुरस्कार	1200/-	
अरविंद कुमार मंगलम (160213)	प्रोत्साहन पुरस्कार	500/-	
अमरनाथ दूबे (119081)	प्रोत्साहन पुरस्कार	250/-	
फिरोज अहमद (127174)	प्रोत्साहन पुरस्कार	250/-	

2. हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता: 05.09.2019			
हिंदी भाषी			
सुमित चब्बा (119102)	प्रथम पुरस्कार	1800/-	
अरविंद कुमार मंगलम (160213)	द्वितीय पुरस्कार	1500/-	
अंशुल (137283)	तृतीय पुरस्कार	1200/-	
संतोष कुमार (137176)	प्रोत्साहन पुरस्कार	500/-	
आशा मेहता (136971)	प्रोत्साहन पुरस्कार	500/-	

3) राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता: 06.09.2019			
हिंदी भाषी			
मनोज तंवर (119104)	प्रथम पुरस्कार	1800/-	
हिमांशु कश्यप (172691)	द्वितीय पुरस्कार	1500/-	
सुधांशु (174383)	तृतीय पुरस्कार	1200/-	
अंशुल (137283)	प्रोत्साहन पुरस्कार	500/-	
अरविंद कुमार मंगलम (160213)	प्रोत्साहन पुरस्कार	500/-	

4) हिंदी वाक् प्रतियोगिता: 10.09.2019			
हिंदी भाषी			
अरविंद कुमार मंगलम (160213)	प्रथम पुरस्कार	1800/-	
आशा मेहता (136971)	द्वितीय पुरस्कार	1500/-	
अंशुल (137283)	तृतीय पुरस्कार	600/-	
प्रदीप शर्मा (136972)	तृतीय पुरस्कार	600/-	
मनोज तंवर (119104)	प्रोत्साहन पुरस्कार	500/-	
संतोष कुमार (137176)	प्रोत्साहन पुरस्कार	500/-	

''हमारा यह निरंतर प्रयास रहना चाहिए कि हमारी हिंदी भाषा समृद्ध कैसे बने।.....
हमे प्रयत्नपूर्वक हिन्दुस्तान की सभी बोलियां, हिन्दुस्तान की सभी भाषाएं, जिसमें जो उत्तम चीजें हैं, उसको हमें समय–समय पर हिंदी भाषा की समृद्धि के लिए, उसका हिस्सा बनाने का प्रयास करना चाहिए।''

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

हिमाचली लोकगीत

माये न मेरीये
शिमले दी राहें, चम्बा कितनीक दूर

हो शिमले नी बसणा कसौली नी बसणा
चम्बे जाना जरूर

हो लाइयां मोहब्बतां दूर दराजे, हाय
अखियां ते होया कसूर

हो मैं ता माही वतन नुं जांसा
ओह मेरी अखियां दा नूर

माये न मेरीये
शिमले दी राहें, चम्बा कितनीक दूर

लोकगीत किसी भी देश, प्रदेश अथवा समुदाय की सांस्कृतिक विरासत की एक पहचान होती है। हिमाचल प्रदेश के संगीत की अपनी विशेष शैली है। हिमाचली संगीत में बहुत सी विविधता है। लगभग हर जिले की अलग शैली है। हिमाचल में मुख्य रूप से कुल्लु, शिमला, कांगड़ा तथा चम्बा जिले का संगीत बहुत लोकप्रिय है। उपरोक्त गीत चम्बा जिले का एक प्रसिद्ध लोकगीत है। इस गीत को यूट्यूब पर सुना जा सकता है।

मनुबाला, उ.श्रे.लि.

नराकास के तत्वाधान में राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नराकास के मंच से सम्मान

समाचार पत्र के पन्नों से

खूबसूरत
हिमाचल प्रदेश

हिम-ज्योति
2019-20

फोटोग्राफी
सुकोमल कुमार, उ.श्रे.लि.
एवं **रौशन कुमार**

ऑनलाइन पढ़ने/डाउनलोड करने के लिए सामने दिए गए वेबलिंक का प्रयोग करें https://www.esic.nic.in/attachments/publicationfile/b3b3170ea526ef28726a274a8dce749d.pdf

स्मार्टफोन/टेबलेट पर पढ़ने/डाउनलोड करने के लिए क्यूआर स्कैनर से सामने दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें